

एक संस्मरणात्मक विवेचन

संस्मरणों के बीच निराला

मदरादि निराला के जीवन-मन्त्रिय वृत्तिव यत्तिव एव
संस्मरणा का मन्त्रिय तथा प्रामाणिक मन्त्रिय ।

शकर सुल्तानपुरी

भारतीय ग्रन्थमाला

प्रवादास एव पुस्तक विप्रता

गूगे नवाब का पाक, अमीनाबाद

लग्ननऊ

- प्रकाशक

विनोद शर्मा

सचालक, भारतीय ग्रन्थमाला

गूगे नवाब का पाक, अमीनाबाद

लखनऊ—१

- मूल्य —

चार रुपये

- द्वितीय संस्करण

मई १९६८

- मुद्रक

साथी प्रस

लखनऊ

लेखकीय वक्तव्य

सम्मरणा के बीच निराशा मन्त्रकवि पन्थि मूयकान त्रिपाठा का गौरवपूर्ण जावन पाका रा सम्मरणात्मक रिदण है उनक व्यक्तिक गतिरियक मानक एक गतिक का विवेचनात्मक और आवाचनात्मक अध्ययन रहा ।

मन्त्रकवि का यन्त्रिगा नामात्रिक और दलिक जावन जमय गागा का प्ररणा जाचय थदा एक आशा का मान रहा है और यगे कारण है कि उनक जन्म कृत्तिक म अनभिन्न रत हुय भा जनता उनका मयानता और स्वत्व के समक्ष नन मन्त्र और थद्वान्त रने है । का भा उनक व्यक्तिक म प्रभावित थ्य विना नन रन ।

उनका दानप्रियता उगारना और स्वाभिमान रा अतर ज्वनल घटनाआ ग गिने साहित्य भग पन है वे घटनायें कानिया का रूप उकर जन-साधारण म कान्गुना जाना है ।

उनक व्यक्तिक और कृत्तिक के मन्त्रम म अतक कविताय मकन मर और कता प्रथ तिम मय है और प्रस्तुत पुस्तक भा उमी शृङ्खला का एक कन है परन्तु दम निराशा का एक जग दम म प्रस्तुत करन का भावना प्रधान रहा है ।

महाप्राण निराशा के आन्तरिक और दलिक जावन तथा उनक आम-गाम का समझाया एक परिस्थितिया का मैन विगय रूप म चचित और प्रस्तुत किया है ताकि पाठर और गिने प्रमा निराशा का अरिच निवट म दम और मप्रथ मके ।

भग विगय है कि निराशा का पदन और समथन म कचि रगल मान मर म प्रमा म अतक प्रभावित ह्य । मैं था विना मर्मा अध्यय भागताय प्रथ माना लपकू रा जानाग हू जिगन मर म प्रयाग का पुनर का रूप किया । नन पय पविशान और पुस्तक का ना आभारा हू जिगन मुय पयाण मगयता मिता है ।

- प्रकाशक

विनोद शर्मा

संचालक भारतीय ग्रन्थमाला

गूग नवाब का पाक अभीनावाद

लखनऊ—१

- मूल्य —

चार रुपये

- द्वितीय संस्करण

मई १९६८

- मुद्रक

साथी प्रेम

लखनऊ

लेखकीय वक्तव्य

संस्मरणा के वाचक निराशा महाकवि पंति सूयकांत त्रिपाठा का गौरवपूर्ण जीवन यात्रा का संस्मरणात्मक चित्रण है। उनका 'यक्ति'व साहित्यिक मानक एवं कृति'व का वि'चनात्मक और आ'वाचनात्मक अध्ययन नया।

महाकवि का 'यक्तिगत सामाजिक और दैनिक जीवन अमध्य भाग का प्रेरणा स्रोत श्रद्धा एवं आशा का स्रावण है और यहाँ कारण है कि उनका जन्म कृति'व में अनभिन्न रहन हुआ था जनता उठाया मंगलता और श्रद्धा के समान नव मन्त्र और श्रद्धा का स्त्री है। वह था उनका व्यक्ति'व में प्रभावित हुआ विना नया स्त्री।

उनका दानप्रियता उत्तरता और स्वाभिमान का अनेक उचित घटनाओं में शि'वा साहित्य भरा पड़ा है वे घटनाओं कहानिया का रूप लेकर जन-साधारण में बनी-मुना जाता है।

उनका 'यक्ति'व और कृति'व में सम्बंध में अनेक कविताओं मकरा तब जा दजना प्रथम विभक्त है और प्रस्तुत पुस्तक में उमा शृंगार का एक रूप है 'स्तु' मम निगता का एक अलग ढंग में प्रस्तुत करने का भावना प्रदान स्त्री है।

महाप्राण निगता का आंतरिक और दैनिक जीवन तथा उनके आ'वाचक ममम्याया एवं परिस्थितिया का मैन वि'वाप रूप में उचित और प्रस्तुत शि'वा है 'वा' पाठक और शि'वा प्रभा निराशा का अधिक निकट में दस आ'वाचक ममम्या है।

क्रम सूची

(क)

- १—महाकवि का पाच सुन्दर रचनायें
- २—पारिवारिक परिचय और प्रारम्भिक जीवन
- ३—निराजा जा का विवाह
- ४—धमपत्नी का मृत्यु
- ५—माण्डित्य महा की जा
- ६—शिल्पी म मृग
- ७—मनवाना निराजा मिन
- ८—मनवाना न नाना निराजा न नाना
- ९—निराजा विन विन विद्वाना म प्रभाविन हुय
- १०—आचाय महावीर प्रमाह द्विवेदा म भे
- ११—निराजा जा का गार्गवि मौल्य
- १२—निराजा माण्डित्य क विभिन्न स्वल्प
- १३—आमार माण्डित्य भविष्य का प्रताक निराजा माण्डित्य

(ख)

- १४—निराजा जा का निवाम-स्थान
- १५—निराजा जा का रत्न-महल
- १६—निराजा और उनर मन्मान
- १७—निराजा क प्रति प्रयाग क माण्डित्यारा का उत्थमानता
- १८—अपगम्य स्वरा णप मपप
- १९—क रमा सामाग
- २०—अन्वयता र अन्तिम माण्डित्य श्लि
- २१—अन्तिम वान म ना अनिधि-मत्तार न भूत
- अन्तिम रात्रि

२३—हिमाचल धरती पर लट गया

२४—चिर निरा म लान

२५—काग मल्य सूटा हावा

२६—गव यात्रा गह-सस्कार

संस्मरण

२७—गाधा जा म टक्कर

२८—नर निराता मितन

२९—व राटपति है ता मैं माहित्यपति हू

—मन्नाट स्तर

३१—मेरु कवि-जम्भेतन

✓३२—निराता का बन्धनान

३ —मरा मा भाव नग मागया

३६—कविवान का सौभाग्य

३५—निराता पावन अथवा मानव सेवा

३६—निराता वज्र

७—मचा श्रद्धाति

८—व ता कवि ना गया

९—निराता न दुःख का रक्षा या दुःख न निराता का ?

४०—निराता परा श

६१—निराता जा का दवा

६ —पत्न कमला फिर निराता श्रद्धा क पात्र है

६ —जब हम निराता जा म मित

६६—सावित्र मध और निराता

६५—निराता दूमरा का शक्ति म

६६—निराता-माहित्य सम्पूर्ण सूचा

संस्मरणों के बीच निराला

महाकवि की पाँच सुन्दर रचनायें

वर दे ।

वर दे वीणावाजिना वर दे ।

प्रिय स्वतन्त्र रव अमिय मत्र नव
भारत म भर ॥

वाट अघ उर व बन्धन म्मर
बन्ध जतनि ज्यातिमय निधर

वनुष भेत्त तम हर प्रकाश भर
जगमग जग वर दे ।

नव गति नव नय तात छत्त नव
नवन वत्त नव जनत्त मद्र रव

नव नभ व नव विन्ग वत्त वा
नव पर नव स्वर ॥

वर दे वाणावाजिना वर ॥



अभी न आगा मरा अत ।
 अभा अभा हा ता आया है
 मेरे वन म मृदुन वमन ।
 अभा न आगा मरा अत ।

हरे हरे य पात
 डानिया नत्रिया कोमल गात ।
 मे नी अपना स्वप्न मृदुन कर
 फरगा निद्रिय बलिया पर
 जगा एव प्रत्युप मनाए

पुष्प पुष्प से तन्नाम नानसा खाच दूगा मै
 अपन नवजावन का अमृत मज्ज मीच दूगा मै
 एर शिवा दूगा फिर उनका
 है मर व जहाँ अनत—
 अभा न हागा मरा अत ।

मर जावन का यह है जज प्रथम चरण
 वमन का मृत्यु
 है जावन टा जावन ।
 अभा पत्ता है जाग मारा यौवन
 स्वण विरग वनान पर बन्ना रे यह बानर मन
 मर न अविक्मिन राग म
 विक्मिन आगा वचु वमन
 अभा न आगा मरा अत ।

[मन् १९४० म तिराना जा न गाधी जा पर एक यममयी कविता लिखा था जिमन बुद्ध अग यहाँ प्रस्तुत हैं]

बापू तुम मुर्गों खात यन्ति ?

ता क्या भजत तानि तुमका

एर गर नत्थू खरे ?

मिर व बन गड इय तानि

मिना क मनन तख्त कवि

बापू तुम मुर्गों खात यन्ति

ता क्या अन्नार टूय तानि

कुन व कुन वायय बनिया क ?

नुनिया के मवम यन्त पुष्प

आत्म भेदा व तानि भा

बापू तुम मुर्गों खात यन्ति ?

ता क्या पन्न राजन टडन

गाणावाचारा भा भजत ?

भजता गेना तुमका में औ

मरो प्यारा अरुना रक्की ।

बापू तुम मुर्गों खात यन्ति ?



[नय पत्त १९६६ म प्रकाशित गम पकोठी]

गम पकोडा —

ए गम पकोडा ।

तन का भनी

नमक मिच की मिता

ए गम पकोडी ।

मरा जाभ जन गई

मिमकिया निकन रना

नार का बूट कितनी टपकी

पर नन तन तुय नबा नी रकवा में

नजम न ज्या कौडा ।

पहन तून मुक्का सीचा

नित नकर फिर कपन मा फाचा

अरा तरे निय छाना

बम्बन का पका

मेंन घा का कचौडा ।

ए गम पकोडा ।



मुख का तिन डब जाय

तुमम न महज मन ऊब जाय

खन न जाय मिता गाँठ मन का

चुट जाय न नरा रागि धन का

धुन न जाय जान गभानन का

मारा जग हट हट जाय

नरा गति साधा न न भन

प्रति जन का नन गन न गन

निराला

पारिवारिक परिचय

और प्रारम्भिक जीवन

निराला जी का पिता पंदि राममण्य त्रिपाठा उन्नाव जिन का पत्निकाता नामक गाँव का निवासी थे जिन्होंने निधनता जाय परिवार का भरण-पोषण का सम्भार न उठा वेगार में जा पड़े थे। वंशगत का मत्पितृ नामक ग्राम में गाय काय का सरक पर था। मत्पितृ का राजा माधव का पुत्र पर विष्णु कृपा था। पंदि राममण्य जी का राजा माधव अत्यधिक मानस्य निमक पदस्वरूप पुत्रा पत्नी का पत्नी का बाल पुत्र मूयकुमार का पालन-पोषण राजा माधव का बच्चा का गाय मक्का द्वारा समान रूप में था। पुत्रा मारा भार स्वयं राजा माधव न उठाया।

निराला का जन्म

वसन्तपक्षमा का पंदि राजान का घर घर में माँ मन्वता का जन्म प्तिवम बना धम धाम में मनाया जाता है पम्बन १२ का समाया एक पावन वसन्तपक्षमा का पंदि राममण्य त्रिपाठा का घर में राजक मूयकुमार का जन्म दिया।

पंदि राममण्य जी का घर जानकर आरामगाम नरुठा। जयन्त अवकाश में बड़ा प्रताप का बाल परमात्मा नरुठ पुत्रधन भेंट किया था।

वसन्तपक्षमा का तिथि विद्या एक पुत्रा का अश्लेषा पुत्रा मन्वता का जन्म

य मगीत प्रमी भा थे । बड-बड मगीतचा और गवय्या क राच बरकर ज्ञान मगीत विद्या का यथेष्ट ज्ञान प्राप्त किया । उन्हा जिना हारमानियम पर ज्ञान गाना का अभ्यास किया । घर-घारे रह ठमरा ध्रुपत भजन तथा बगना के भाव गाना का जेडा अभ्यास ज गया । गान गाबित क सम्कृत गायन म नकर-मूर तुनमा मारा आदि क अनेक गान वना कुगवता पूवक गा नते । यहा कारण था कि य मवप्रिय ज गया ।

निराला की कुछ रोचक प्रवृत्तिया

निराला जा कुगवत तरगत भी थे । य बडी कुगवता पूवक तराकी की अनेक वनाभा का प्रदशन करते थ । य वना ज्ञान राय म ज साखा थी ।

य गाना क सन म भा बड पारगत थ । गाला जिनना ज दूर क्या न ज नका निगाना अचक बरता था । य ताग क तरत नरत क खेला म भा कुगव थ ।

नक पुत्र ज रामकृष्ण त्रिपाठा न स्वय अपन नक म निग्या है—निचय ही निगाना जा का जावन जनक गुणा का समवय था । बरत ग फला या पथर क रकना का नरक जब मानाकार न्या म घमान था जना मुत्तर रगता । क्या मजान कि काई टरना जमान पर गिर जाय । व मभा टक प्रम म उनक हाथ का छुनर आममान का आर भागत जिवात न थ ।

अपन ऊपर फके गय या प्रनार किय गय ज क टरत या पथर का बना कुगवता म पकड नन थ । प्रनारक का पथर निगाना का छ भा न पाता बनि उमन वना ज्ञान जता था ।

निराला जी का विवाह

निराला जा का विवाह मन १ १११ क नगभग सम्पन्न दुआ । जम समय उनका अवस्था ११ वय का जना जगा और उनका समपता का ग्यार-बारह वय था ।

निराना जा क स्वमु ५० रामायान त्रिवेणी (चानपुर) फतहपुर क निरामा य । व मुन्नी मग्गध और रईम आत्मा य । भारी दान दहेज देकर उहाने बह धूम धाम क साथ बेनी का ब्याह किया था और एक बप बाब उमका गौना भी कर लिया था । कुछ दिना बाद रामगहाय जी अपना बहू और निराला का साथ लेकर बगान आय त्रिवेणी अब निराना का मन पटाई की आर म रचन नगा था । नगा कथा ता उतान किमा तरह पाम कर ला मगर दमवा कथा न फा मक । परीशा पत्र और बापी यू हा छाडकर उहाने विद्यार्थी जावन म मयाम ल किया परन्तु घर म यह बाब प्रगट नही की । पराशाफत निराना ता सच्चाई पिता क सामन आई । व निराना पर बहुत बिगड और उमक ठाट-बाट क मार कपट छान किये । उनकी धमपत्नी क गहन भा उतरवा किय और उह पला मन्नि घर म निकन जान का आत्मा लिया ।

उहाने निराना जा मे कहा अब तुम बडे हुय जा कुछ पटना था पट चुक । तुम्हारा विवाह हा गया । तुम्हारे प्रति भरे मभा कत्तये पूण हा गय । अब तुम उपाजन करके अपना तथा अपनी पत्नी का रख चनाया ।

पिता द्वारा निष्ठागित ज्ञान पर वे पत्नी मन्नि अपनी समुरान डनमऊ चन गय । वहा पर उनका खूब स्वागत हुआ । समुरान बाना न लामा का खातिर म बोई कभा बाका नहा रखी । निराना जा का वहाँ किमा प्रकार की चिन्ता नहा करना पडा ।

जमा मन्नि म एक राचक और महत्वपूर्ण घटना का वषन कर पना आवश्यक होगा जिनन हम क्या समूच भारत का हिन्दी का जना महान कवि लिया । निराना का हिन्दी म आना भा एक राचक घटना है ।

एक रान निराना जा न हिन्दी भाषा मग्गधा किमा प्रसंग पर अपना धमपना म कहा—तुम हिन्दी हिन्दी करना हा लिना म क्या ?

जब तुम्हें आना हा नहा तब कुछ नहा है । पत्नी न उत्तर लिया ।

धमपत्नी क मग्गध गन्ना म निराना का अपना पगत्रय स्वीकार करना पडा किन्तु वे पुत बाब—लिनी हम नही आती ?

पट ता तुम्हारा जवान बननाता है । पत्नी पुन आया । बतबाडा बाब लेन हा । मुनमीश्वर रामायण पडी है वम । तुम गहा वाला का क्या जिनन ना ?

वास्तव म उस समय तक निराता जा का हिन्दी का खडा बाता क साहित्य का जानकारा अधिक् नहा थी । धमपत्ता न ही इहू आचाय महाभार प्रसाद हिन्दी परिधीध मयिनागण गुप्त जाति की रचनायें बताइ और उन् पत्न क निय प्ररित किया ।

उन् का प्ररणा म वे वगता की गम्प्यपामता धरिणा म विच कर हिन्दी साहित्य की धार क्षर ।

जाज हिन् निराता का हिन्दा का युग प्रवतक मन्त्रवि क जान का अय उनकी धमपत्ता का ती प्राण है अतएव हिन्दी जगत उनका मन्व आभाग रगा ।

निराता जा अपता धमपत्ता मन्ति लगभग छ माह मसुरात म रह । बाप का जब पन्ति राममणाय जा स्वल्प का तीर ता स्वय आरर अपन पुत्र और पुत्रवध का घर वापस न गय ।

धमपत्नी की मत्यु

दण भर म कपनएजा फता हुआ था । म्सा भयकर बाभारा न मन्त्रवि का प्ररणापयिता धमपत्ता का भा मौत की गात्र म सुना लिया । उम पत्न म हा राताप न हुआ उमन तक अय बुटम्बजना का भा एन एक करक प्रमित कर दिया ।

महाकवि पर भाषण जाघात रगा । म्म समय निराता जा का ला सतात था पुत्र रामवृष्ण तिमका जाय चार बष का था तीर पुत्रा मराज जिमका उम एक बष का था । उन दा रचा का ता पावन-पापण क विण ननिनाय बाता न न दिया किन्तु निराता जा क मामन जभा अपन भाप क चार बचा र पावन-पापण का ममस्या था । व उह उकर मन्त्रिणाउन गियामन म चन गय तार शायाम प्रम प्राण कर बना उनका पावन-पापण करन नग । निराता जा न दण काय करना भा आरभ कर हिन्दी किन्तु तिम गियामन का मन्त्रय जावन भर उकर पिता न पूण तल्पयता क माय का था निराता रगा ला ल बष म उर गय कयाकि व म्वनत्र विनाग बात स्वाभिमाना मन्ति र । उर शत्रुनविन उर म हिन्दीवम्पा न गा । उनका की रय बष म उकर रगा ।

अन म एन स्नि उतान नीररा पर त्याग पत्र भे जिया । अपनी जातरिक भावना और हृदय का व अधिक त्वाय न ग्य मन ।

स्वच्छ विचारा और भावनाआ म विचरण करन बाता कवि हृदय वचन कहा स्वीकार करता भे ?

पना का आकस्मिक वारुणिक मत्यु न निराता न कवि हृदय को गहरा आघात पहुंचाया उनको मुसामत भावनायें वेना क गन्ध सागर म डूब गई और फिर विंगाप रूप म उनका साराव गार्हिय मजन की जाग दुआ जा अतिमात तक उनक माय राग ।

कवन बाण वष का जवस्था म पत्ना का साक निराता का जम प्रतिभावान और मुग्ध नश्यवन क निय दूगग विवाह पर नन क निय प्रत नागा का दशाव पना किन्तु उतान पुन रिता मूद्र म प्रयता स्वाकार नन किया । जिम पावन प्ररणा का उा न अरस्मान का जिया था उमा क विवाग म जनमान तक डूब ग ।

निराला—साहित्य सेवा की ओर

मन् १९२० म नीररो त्यागन क बाट उतान गार्हिय-मरा का दह वत जिया और अनन मपरों का मामना करत हूय भा अपन पत्र पर दूढ रह ।

प्रारम्भिक ज्ञान म न्य क्षण म उह जाना प्रसार क मकट बनन पन किन्तु निराता कभा विचरित नान नहा दस गय ।

ना मुन हृदय का गार्हिय म धार निरात जिया गया । आलोचना ने उनका मुन हृदय रसाआ का रचजा और रचन का उगाविया न ।

पना न्य गार्हियर निराय का प्रभाव उतान जाविक कि ति पर भा पना । निपतता का अभिगाप नाना रण ति न ज्ञान रचन का पनाई निवारि ता ना उचित स्पष्टता न नन मक पनतु जरा वचना क प्रति उतन न्य म न्यार मन् था आर क नन नाना म उह प्रगत गया गुमा न्यन क अभिगाप रचन थ । आवाचना का पना परता न करत थे निरार जय मूद्रत क प्रति गतिगात न ।

एक समय एमा भा आया कि विराधिया का उनक समय नन मस्तक हाना पना । निराला क कृतित्व का मायता दन के निय ब विवग हो गय ।

निराला जा हिन्दी के युगानरकारी कवि रह है । जिज्ञान अपनी प्रतिभा क दल पर जिन्दा-साहित्य म नया माड पना किया है । जोदि कवि बात्माकि स सकर अब तक हमारे देग म छटना क जतिन नियमा म विवद कविता को मुक्ति निलाने वाल निराला क अनुशासिया का मभ्या आज हिन्दी समार म षाडी नहा है ।

उहान अपना हिन्दी प्रतिभा और अदम्य सात्स के बन पर हम निहा किया कि काव्य की हम नूतन निया म कितना सम्भावनायें विद्यमान हैं ।

उनकी काय गला उाक विद्वानी स्वभाष का परिचायिका है । वे सामासिक जावन म सामाजिक रूनिया के कट्टर विराधा थे और छटा की गति एव मात्राआ की स्वच्छदता एव स्वनयना के प्रमा थ ।

निराला का हिन्दी मे साहित्य सृजन

पला का मासिक प्ररणा न निराला का बगता का पामला धरना स साच कर हिन्दी साहित्य उपवन का पानविन पुणित करन का विवग कर दिया ।

उमा समय उगान हिन्दी का खडा वाता का अभ्यास करना आरभ किया । आरभ म नये निया विभक्तिया और निगाना म उनज्ञान म परनु कुछ ही समय के अभ्यास और परिधम न नका समस्या न कर ना और य परिपक्व नाकर हिन्दी म अनवरत निम्न तग ।

दर नका अचक माधना का न पन था कि अपना अनन्य काव्यगत विापनाआ क कारण य अपन नाम-दयस्व साहित्यिका का पणन कर वनन आग निकन गय । उम समय का नका रचनाआ म 'जुना का कला का आररणाय म्यान है । १९१६ म नका अरिवाग प्रकाशित म था । नन निया नान रवाचनाय टगार और म्यामा विवकानन का कविताआ का रवावद अनुदान भा किया था । मन १०१० म नान निया-बनाता का तुनदानक व्याकरण निका था ।

मतवाला निराला मिलन

जिन जिना निराला का सम्बन्ध का सम्बन्ध काय कर रहे थे उमा मध्य एव
जिन उनका सम्बन्ध मतवाला का सम्बन्ध काय महात्त्व प्रमाण मठ म हुआ ।

मत्त जा अपनी महत्त्वना और गुणवत्त्वना का निय प्रमिद्ध य अतएव पाप ही
व निराशा का प्रमाणका का प्रथम श्रेणी म आ गय ।

निराला की तत्त्वार्थिन उमाजा का सब साधारण म प्रमाणित करने म स्व० मत्त
जा का बहुत बड़ा सम्बन्ध और हाथ रहा है ।

मत्त जा न निराशा का वृत्तिक का पञ्चाना । उनका वृत्तिया को मापना ही और
निराला विराधा मान्दिक ठेकेगा का आवाचना का परवाच न करके उनकी छान्द
रचनाका को प्रमाण म आन या बदल गिया । वाच का उर्हा विराधिया का नन
सम्बन्ध जाना पडा ।

उर्हा का प्रामाह्न स्वरूप निराशा का आत्मिया प्रतिभा जिन गमि के साथ
प्रस्तुति जाना चला गई ।

‘मतवाला न होता, ‘निराला’ न होता

मत्त १०० - १४ म मतवाला का सम्बन्ध काय सम्बन्ध मठ न निराशा का मतवाला
म हुआ गिया । वाच का यका मतवाला निराशा का प्रतिभा का विराम एव प्रमाण का
विस्तृत माग सिद्ध हुआ ।

मत्त का सामान्य—निराला उर्हा जिना मतवाला का अनुप्राण पर किया गया ।
मत्त का परिमत्त म मत्त जिन रचनाओं अधिकांश मत्त प्रथम मतवाला म ही प्रमाणित
हुई था । मत्त का उन मुक्त छन्द का रचनाका का फिर विराधिया न भा मत्त का किया
और मत्त उच्च स्थान प्राप्त हुआ । वाच का निराशा का जिना जिना का परवाच जिन
आन सिद्धि माग पर अधिकतम जिन मत्त । उनका विराध काय वाच उनका माग
का अनुप्राण करने जग । उनका पयगाभिया का मत्त मत्त म पढ़ने गई । वाच का
मत्त जिन बयान मुक्त म गय और मत्त जिन ने मुक्त का परवर्धित कर दिया ।

निराला किन किन विद्वानों से प्रभावित हुये ?

महाकवि स्वामीदास टगोर ने वे ज्योतिषी प्रभावित हुए और टगोर के साहित्य ने उन पर सज्जन का गहरा प्रभाव रखा। रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानन्द का विचार द्वारा और उनके उत्कृष्ट जीवन स्थान ने निराला को विगल रूप में जाकृष्ट किया। वे कवन साहित्यिक ही नया बने उन बरन साहित्य और विचार भी बन गए।

पंति महावीर प्रसाद त्रिपाठी के सतसुग स्वरूप उन साहित्य जगत में निराला के बदन की प्रणाय मिला। उन का प्रणय म उन मम वय पत्रिका का सम्पादन भार भी उठाया और मफ व सम्पादन के रूप में १२ वर्षों तक कार्य किया।

स्वर्गीय मन्मथ प्रसाद मूक का निराला का निराला बनाने का सतसुग वय प्रय है। निराला का साहित्य प्रतिभा में परिचित करने उन उन म अपनाया और मन्मथाता में उनका स्वाभाव निराला प्रकाशित करने गया। त्रिपाठी फलस्वरूप उनका कवि सम्मन रूप में फलता गई।

निराला को अधिकांश कवन कवयिता के साथ प्रयाग जमा पावन नगरा में ही अपनाया गया। जो शिल्प के जन्म मन्मथिया का मूक रहा जाता है और साथ ही साहित्यिक भी। उनका इन निवाग के विद स्थान भी अधिकांश निमन और प्रणय शयक बना—गंगा का तट।

नगराज प्रयागवाग मन्मथाण निराला का पावन मुग्धरि ने गर्वाधिक प्रभावित किया मूक बना अनिवायानि ने गया।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी से निराला की नैट

सम्भरण क बाव निगता]

अचानक एउ निगता म जयत न विना एन बाव स्वामा म कु विवाह न
गया अर फिर स्वामिमाता निगता न नौतग गाय ल ।
व गिगामन का नाकग एउए जयत नैव एव न ।

एउनु एउ जायत निगता का माँ - गवा म विमुग नया क मरा । विनता
न जायित ममया नर ममग वया न ए व परगान एव नया एव ग ।
उया निना निगता जा अचाय मगवार प्रमा द्विवग म मिन व विउ
कमानना बानपुर जाला एव न । वि वया ता उन नि ना मरावना म एउया प्राय

निगता का जायित निमता पर विवित एउ विवग जा न क याना पर
नका नौतग क वि विवाभया का एउनु निगता ना जाभन ए न निगता व ।
व कया जान या नएव न एय अर एव म पुन गिगामन व एनुरग पर वया
नौतग स्वाकार क या ।

वि वया जा क एव एनुरग पर न एयत एउया मनिगएव म एना स्वाकार
विषा या ।
वया पर निगता जा न गमगण परमएव तथा स्वामा विवकान गानिय का
एभार एउयत विषा ।
ममवय म गिगामन नका एवनाय प्रगामित याना एव ।
एयत न वयो पर एमवय का एमनाय बाव ना विवा ।

निगला माहिन्य के विभिन्न स्वरूप

एवि निराला

निगता क एवय म विगता का एवयन प्रविगिगामे विनता न व प्राभन न न
वनिगारा नावना का एवयत थ । एवक एम वि चारुगण का एउ गानिय
मयन ए एउयत एवो प्रभाय वया एवत एव काय म माँ एव का एवनायन

निराला किन किन विद्वानो से प्रभावित हुये ?

महाकवि रमाद्रनाथ टगार म व ज यकिन प्रभावित त्य आर टगार क साहित्य न उन पर सजन का गत्य प्रभाव जाता । रामकृष्ण परमहंस और स्वामा विवशानन्द का विचार गग जीर उनक उत्कृष्ट जावन त्पन न निराता का त्रिप र्प म आहृष्ट किया । व संवत मां त्रिय न मग धन र्प वरत तागतिन जीर विचारन भा वन गय ।

पत्ति महावार प्रमाद त्विवा क सनमग स्वल्प उर साहित्य जगत म निरतर वरन का प्रणायै मिता । उ । रा प्ररणा म उ गन ममवय पत्रिका का मग्गान्त भार भा उगया जीर मकन मग्गान्त क रूप म त्प यर्षो तय गाय किया ।

स्वर्गीय मगाव प्रमाद गट का निराता का निराता बनान का मग्ग वग त्रय है । निराता ता गाय प्रतिभा म परिचित गार उ गन उर स्न म अपनाया जीर मद्राता म उनका ग्ग्राय निरतर प्रगणित गती र । । निगक कास्वरूप उनका कानि मग्ग त्प म फैवता गर् ।

निराता का अग्रिहाण जावन रतकता क धा प्रयाग जमा पावन नगरी म श्री यनान र्ग । जां ति ता क जनक मग्गगिया का गट उरू जाता है जाग माथ ग तापरज भा । उरान त्पन निवास क त्रिय स्थान भा अर्थिक निमव जाग प्ररणा तापर चना—गगा का त्प ।

गारागज प्रयागवागा मगाग्राण निराता का पावन गुरगारि न सर्वाधिक प्रभावित किया यर क्पना अतिगयाकि न गगा ।

आचाय महावीर प्रमाद द्विवदी स निगला की भेंट

अत्रानक एक त्रि निरात्रा म अपन जाविका त्ने दान स्वामा म कुट द्विवाट हा गया जीर फिर स्वाभिमाना निरात्रा न नौरा याग टा ।

व गियामन का नाकरा द्वाकर अपन गाव चन गर ।

परन्तु घन जाघात निरात्रा का मान्दिय मवा म विमुक्त नन कर मवा । विनता न आविक समन्ता उनक समथ क्या र र व परगन्त जत नन र्म गय ।

उहा त्रिा निरात्रा जी आचाय मवावार प्रमाट द्विवाट म मितन क त्रिय वमानभा कानपुर जाया करत । द्विवाट जा र्न त्रिा यरम्बता म अववाग प्राप्त कर वन निवाम करत ।

निरात्रा हा जाविक त्रिमता पर चिनिन वाकर द्विवाट जा न कद म्याता पर उनका नौरा क त्रिय त्रिवा-पन का परन्तु निरात्रा ता जाग्म म न निरात्रा । व वन ज्ञान का तयाग न दृय और जन म पुन गियामन क अनुगा पर वन नौरा स्वाकार कर ता ।

द्विवाट जा क वन अनुराग पर हा त्तान टुराग मन्दिपान्त म जाना स्वाकार विया था ।

वन पर निरात्रा जा न रामरुण परमन्त तथा स्वामा विवेकानन् मान्दिय का गम्भोर अध्ययन त्रिया ।

समवय म त्रिा उनका रचनायें प्रकाशित जता र्ना ।

उत्तान न वपों तर समवय का नम्पान्त वाय भा विया ।

निराला माहित्य के विभिन्न स्वरूप

कवि निराला

निराला क रान्त म पिदाह का वन प्रतिश्रियाय मितता न व प्राम्भ म न मान्दियारा भावाजा क पापक थ । उनका र्म विचारधारा का उनक मान्दिय मजन पर अत्यन्त स्वर्गीय प्रभाव वन करत उनक वाध्य म मान्दिय का नकालान

परम्परा सबथा परिवर्तित हो गई। काव्य को छन्द-बद्धता की जटिल शृंखलाओं में मुक्त गाना पड़ा और उत्सवों का असौम्य अभियोजना की पृष्ठभूमि मिला।

प्रख्यात विद्वान् आचार्य नन्ददुन्दुवारे वाजपेयी ने कहा है 'रस्य की कलात्मक अभिव्यक्ति की जा बहुविध चट्टायें आधुनिक शिल्पी में गई हैं उनमें निराला की कृतियाँ विशेष उल्लेखनीय हैं। कुछ कवियों ने तो रस्यपूर्ण कल्पनायें की हैं किन्तु निराला के काव्य का महत्त्व ही रहस्यवान् है।

वास्तव में जिस प्रकार निराला ने कभी अपने जीवन में किसी प्रकार का बंधन स्वीकार नहीं किया उसी प्रकार उन्हें अपने काव्य में भी बंधन स्वीकार नहीं था। उनकी यह मुक्ति भावना साहित्य में एक युगांतकारा प्रयोग था जिस तत्कालीन साहित्य में मजा नहीं जा भर कर उताड़ता परन्तु वास्तव में जिस निर्वाण साहित्यमयता मिली और नागा ने निराला का पहचाना। मगर अर्थों में निराला कवि थे और विद्रोही कवि। विद्वान् समझते हैं कि उनका युगांतकारा रचनाओं में विद्रोह का आमंत्रण था ऐसे विद्रोह का आमंत्रण जो काव्य के कायाकल्प और उत्थान के लिए था। परिमल की भूमिका में उत्थान स्पष्ट किया है— मनुष्या की मुक्ति की तरफ कविता भी मुक्त होती है मनुष्या का मुक्ति कर्मों के बंधन में छटकारा पाना है और कविता का मुक्ति छटका के गाम्भव में अलग हो जाना।

अपना मुक्त छन्द गाना के समस्त जातों का उत्थान जोड़ रक्षता और अंत में उनका महत्त काव्य प्राप्ति के समस्त विषयों का घटने देकर पद।

वास्तव में अनेक कवि इस धारा में प्रभावित हुए और उन्होंने निराला का धारा का अनुसरण किया।

उनके मुक्तछन्दों में काव्य प्रवाह अतिसारिता मनोरमता शक्तिशाली भाव-व्यंजना के दान गान है। वे इस क्षेत्र में बड़ा है। उनकी मौनिकता का गहन बंध प्रमाण यह है कि अनेक उनकी मरुत नरुत भा गान का जा सका।

उपन्यासकार निराला

निराला महान् कवि हैं तथा महान् उपन्यासकार भी थे। वे रामकृतान्त नाम

व गन्दा में सामाजिक यथाथ का चित्र निराला के गद्य साहित्य में और भा विराटता व साथ रखा और रंग की और भी सजीवता के साथ मिलता है ।'

अपसरा उनका प्रथम उपन्यास है इसके बाद अलका निरूपमा, प्रभावता चाटा की पक्की कुल्ली भाट वाले कारनामे और बिल्लेसुर बकरिहा रादि का नाम आता है । इन सभी कृतियों में तत्कालीन सामाजिक जीवन का अत्यंत यथाथ चित्रण मिलता है । यथा कृति हास्य-न्यय आश और रोमान का सफ़्त वणन मिलता है ।

उन रचनाओं में कादम्बत चित्रमयता के दान होते हैं । पाठक चरित्रों को अपनी आगा के सामने चला विरता अनुभव करता है । जमादारा व निमम अयाचारा से सटने हुए विमाना के चित्र सामने आ जाते हैं । अपन सतात्व का रक्षा में इत्या करने में भा न डरने वाला स्त्रिया में जो त्यागवारा भावना हाती है उस उदान खूब पहचाना है और उसका अत्यंत हृदय स्पर्शी वणन अपनी रचनाओं में किया है । वस्तु विन्यास पात्र चयन चरित्र चित्रण भाषा शला समा दष्टिया व उनक उपन्यास अनुठ है ।

कहानीकार निराला

निराला की कहानियां और रत्नाचित्रा में हम समाज व कट यथाथी के दान हाते हैं ।

कहानियां में चतुरी चमार निली और सुकुन की चावा आदि सप्रत हमने प्रयत्न प्रमाण है । और रत्नाचित्रा व रूप में कुल्ली भाट और बिल्लेसुर बकरिहा आते हैं ।

उनकी कहानियां में बग बधा साहित्य का तत्कालीन सामाजिक छाया है परन्तु वतमान व यथाथ में भा के प्रभावित है । ग्राम्य जीवन व चरित्र चित्रण और वातावरण और परिस्थितियां का सफ़्त चित्रण उनका कथाओं में मिलता है । इन कहानियां में धारा आदर्शवादी नहीं है यथाथ जीवन का ज्ञान है । एक प्रकार में उनका ग्राम्य कहानियां आज का आधुनिक कथाओं का प्रारम्भिक पृष्ठभूमि और माग-लान कहा जा सकता है ।

ऐसा हा सजीवता उनक रेखाचित्रा म भी मिलती है। वे अत्यन्त सजाव स्वाभाविक और हृदयस्पर्शी बन पड़े हैं। धातावरण का ऐसा सजीव वर्णन गंगा का ऐसा अनुपम चनाव और वर्णन की ऐसी सूक्ष्म दृष्टि श्रिता बहुत कम साहित्यकारों म पाया जाती है।

व्यंग्यकार निराला

निराला न साहित्य को मात्र गम्भीर गूढ कृत्तित्व से हा अनकृत नया किया है वरन् उनका रचनाआ म हम चभन हुय एक यथाथ तथा हास्योत्पादक व्यंग्य के भी दान होने हैं।

उनका मन् व्यंग्यात्मक पुन उनक काव्य उपयाम और कहानिया म मिलता है और उनक निबन्ध भी व्यंग्य म भजन नया है।

बुकुरमुत्ता गम पनौठा तथा बंता और नय पत्त भादि रचनायें उनका वचन उत्कर्षण है।

सन् १९४ म उत्तान बापू पर निम्नलिखित व्यंग्य किया—

बापू तुम मुर्गी खाते यदि
ता क्या भजन हात तुमका
एर-गर नत्य सर
मिर के बने सन् दृय हात
हिन्दा के सनत नस्ल-कवि
बापू यदि मुर्गी खात तुम ।

और बुकुरमुत्ता का ये पक्तियाँ ना विम्बन नया का जा सकता—

अब मुन के गुनाव
भूत मत जा पाया शगव रगा आब
सन घुमा सान का नून अगिण्ट
गान पर सनग रना है कतिविम्ब ।

यह भमना कुकुरमुत्ते की गुनाब को नहा बल्कि निराधिता जीर निधना द्वारा पूजावाणी की की गई है ।

जसा कि ऊपर बता जा चुका है निराला का गद्य रचनाआम भा 'यम्य' का गद्य पुत्र है परन्तु 'यम्य' का यह गहराई विशेषकर अस्पष्ट दृष्टिगत होता है ।

उदाहरण क लिय 'म पल और प'नव' और सामाजिक पराधीनता आदि रचनाआम का ल मकत है । उनको कहानिया और उपयामा म भी जहा नहा गायण पूजावाण सामाजिक 'धमिचार और प्रसन्ता क प्रति शान्तिकारी और चुभता हुआ 'यम्य' दृष्टिगत हुाना है ।

यह 'यम्य' मात्र 'यम्य' ही नहा बरन एसी हृदयबधक चेतना भी है जा पाठक को निरमिता दना है । निराला क 'यम्य' निरथक और बबल मनारजक नहा कहे जा सकते ।

सम्पादक निराला

निराला जी न कुछ समय तक समय जीर मनवाता जय हिंसा पत्रा का सम्पादन बाध भी किया है । सन ३७ ५८ क आस-पाम के लखनऊ क मुधा बापांनय म बन्त थ । सम्पादन म मौक्तिका उनका प्रमुख उद्देश्य था । उनक सम्पादन कान म मुधा का रूप काफी सुधरा । एक मजग सम्पादक क म्य म के अथक परिश्रम करते थ ।

मनवाता और समय क अनेक सम्मरण उनक साथ गुथ हुय है ।

उहा शिता निराला क नाम पर कता नामक पत्रिना भा यहाँ आरम्भ हुई परन्तु अधिक् शिता तक वह भा न चल सका । बदलनम और उच्छ्वल आदि का प्रारम्भ भा उमा कान म हुआ था परन्तु वाण का क सब भा बन्त हा गय । 'सप्त' श्वार तथा किया जा मवता कि निराला न सम्पादन परम्परा का एक सगत् नाब रचना ।

निबन्धकार एवं समीक्षक निराला

निराला का कल्पनिया एवं निबन्धा में इतना साम्य है कि उन्हें एक दूसरे में जगमग कर पाना कठिन सा है। उनके निबन्ध स्वाभिमान और सशक्त मृजलगतिक उनके निबन्धा में मिलता है। उनके निबन्धा की भाषा और विवेचन शिल्प अत्यन्त प्रभावकारी और प्रबल लगता है। अपने निबन्धा में उन्नत बनी निर्भीकतापूर्ण गला में विषया का प्रतिपादन किया है। परंपरा चक्र और किसी प्रकार की नाग-नपण बनी लिखाई नया पडती।

व एवं कुतर्क और सफल समाप्त भाषा। चातुर् भारतीय वाप्य दक्षिण एवं लिखा माण्डिय में उपनाम आदि रचनाय समाप्त प्रमाण है।

वाप्य माण्डिय समाप्त वाप्य और अग्रजा समाप्तोचना के वह बंध अध्याता है। इन सफल परिणाम में वह लिखा में भी एक गाफ-मुयरा स्वाभिमान भरी मौलिक दक्षिण उपस्थित करना चाहते थे जिसे लिखा के नव के ईई परम्परापूजक रूढ़िवादी आलाचक नया समान थे। व वक्त शासक मरण में जानते थे कि अग्रजा सामाजिक बहिर्गा में नया अवतरित नया नया सशक्त और नया नया बगना नया मनमानिक लिखी दाआय में आकर समाप्त। वाग्गर्क नया सशक्त है समाप्तिक व लिखा का अपना स्वतन्त्र समाधा निर्मित करना चाहते थे।

अनुवादक निराला

अनुवादक के रूप में उन्नत मधुत में वाग्गर्कन के कामगुप्त का बगना में आगम कृष्ण नयामत वाग्गर्क भागा में विवेकानन्द का ज्ञानवाद्य द्याग्गर्कना का और बहिर्क द्यावावदा का द्याग्गर्क पुस्तक का नया उगाय का भाषा कुतर्क उगाय कृतिया का अनुवाद लिखा। उनके अतिरिक्त उन्नत अनुवाद के अनेक पुस्तक वाप्य भाषा लिखे। इन अनुवादों में उन्नत मधुत रचनाकार का भाषनाय और लिखनाय का गाथ मित वाग्गर्क नया लिखा। भाषा का सामान्य गुणित रचना और अनुवाद का मरण गुणम और गाथक बगना। अनुवाद के लिए उन्नत समाप्त नया मधुतपूण और उगाय रचनायें वन लिखना उनके पूण भक्तिभाव श्रद्धा और एकामकता रण। व वधुगर्क प्रतिभा

क धना कनाकार थ मात्थिय क जिस भद्र भा भा म्पन किया वह उपकृत जोर
क्षतकृत हा गया ।

निराला जी का निवास स्थान

प्रयाग म निराला जी के निवास स्थान ना मो डड मो वर्षों क पत्र भा भवन
निमाण बना का नमूना कना अतिशयाक्ति र हागा ।

उम मकान क ना स्थित है । प्राग वान स्थित म स्वपत्र पत्र २८ है और पाछ
वाल स्थित म निराला जा रत्न थ । उनी क ममाप एक कारना है उमक आग
काग और उमी म मना हुआ रमा पर । आगन वन्द ना छाटा है । नाराग की
पुनार्द मिट्टी म का ग ३ । मकान ना स्थिति अत्यधिक गच्छनाय है । मगर मन्त्रकवि
न र्म आर कभी ध्यान ना लिया । गर्मी क स्थित म व नीच का काठरी क उपयाग
कृत थ । उम काठरी म उनका पुस्तकें तथा अ्य सामान अम्न-ध्वम्न दगा म विखर
रत गय है ।

निराला जी का रहन-सहन

प्राय निराला जी घर म स्वयं जपन गया म खाड गगत थ । खला हई छन
पर नग बन्द कमर सवाय हूय व मजा व्याज आदि बागत । मकान म उनका
रहन-सहन एक विरागा का भीति था । जिन कमर म व रहत थ उमम तान चार
मिट्टी क बन्द रक्व रत्त थ । कुछक म आटा दान चावन आदि रत्ना था और
कुछर खाता ना रत थ । वना पर ए मामूना मो दावात जीर गन्त भा पडा
रत्ता था जिनम मगादि रचनाय कृत थ । पथ-पथिकाय जाग विभिन्न भाषाजा
का मात्थियन कृतिना भा २० ति मिगरा लिखा रत्ता । एर जाग खना पर खानो
का पुगना बुना दगा रत्ता वा दूसरा जाग वान म पुगन जूत पर रत थ । सामन
मिन्का पर क व तर का तापक रक्गा रत्ता था और उमा क ममाप तन का
गागा रक्गा रत्ता था । काग क वाचायाव एर पत्रा पुगना सूत्र रत्ता था जिन
पर मन्त्रकवि विप्राध कृत थ ।

उनके काठ का दगा जल्यता गाचनाय है। छत्र नाच का झुकी हुई है और उसकी कटिया जजर न खुला है। किमा नाच पर नमक बिखरा पटा है ता किमा पर मिचर जोर किमा पर तन्मुन और सूखा पाटिया। एन आनमारा म दा बदन लिखाई पडत है। नम म एन बदन धी रखन के काम म जोर दूमरा चूना भिगाने क काम म आता था। कथाकि निराला जी को पत्त बाता तम्बाकू के साथ चून की बडा जरहन पन्ता था। ऐसा न अम्न-अम्न रंगा मन्गवि के रमाई घर का भी थी। समूचा निवाम स्थान कनाकार की नापरवाला का स्पष्ट सकेत देता था।

कभा कभा जिक्र थक हान के कारण व किमा का बाजार भजकर अपनी मन पमन मजा मगवा तत। जागन्नुक जिनियि ना स्वागत के निराला रग म करते और अपन श्री हाया म उमक निय भाजन तयार करत। महमान व स्वागत क निय वे दा तरह व नय माग तयार करत। अपना चन्द्रा म किमा ना बिराद उह स्वीकार नग जाता था। किन्ना न नेर क्या न न जाय व बर तमानान म विधिवत भाजन तयार करत थ।

कभा-कभा नकन बचन बात उह गाता नडियाँ न तत थ जोर उह आग जवान म बर पगान जाता पडता था। स्थाना धार धार पकता रन्ना जोर वे रमा छडाडकर अपन मन्मान अथवा भक्त ना अपना चन्द्रानुसार गान कविता जोर गत्रत जाति मुतान तगत। मू आन पर कभा कार् कविता प्रकाशन क निय भिजवा तत।

उनका रमाई लगभग २६ घण्टा म तयार जाता था। पन् व बनी जात्यापना जोर स्त म मन्मान का भाजन करत तपचान स्वय भाजन करत।

निराला का शारीरिक सौंदर्य

उदास का ना म न निराला का चचान तगा बग जागान था। उनका मन्मान कनिव किमा न जवाना नग न।

त्रिम गार न व निराला तत तगा का कना बच वना पु कना जवान जोर कना मन्माने मना का नाम जवान मडा प्रम गार मन्चय म उ नित्यरता न

जाता। उनमें विचित्र आक्षेपण था अनुपम हृदयस्पर्शी भौदय और मुग्धामयी सात्विकता था।

उनके मुखमण्डल पर त्रिभुज विद्यमान था। उनका मामा य जन दुर्गम लम्बा कं मासल और चौटा वक्षस्थल मल्ला जस पुष्ट स्नाघ और नम्बी नम्बी अगुनिया स युक्त मासन भजायें उनक गारारिक सौन्दर्य के सजीव रूप थे।

उनके नेत्र दाघायत गम्भीर तथा कुट्ट रक्तिम आजस्वा तथा चिंतन में परिपूर्ण थे। शीवनावस्था में रख गये लम्बे नम्बे बान और घनी बढा हड्डी दाढा यह सभी कुछ मित्रवर व अपनी अटपटी वगभूषा और अटपटी चाणा के साथ प्रयाग निवासिया के निय ही नयी वर्गन हिन्दी ममार के त्रिप अविस्मरणीय रहने।

जिम्ने एक बार भी, कुछ क्षणा के त्रिप ही निराला के सम्बन्ध का सोभाग्य प्राप्त किया है वह निराला का कभी भूत नया सकता।

उनके मोहन व्यवहार और हृदयस्पर्शी बातोंनाप में जो जादू था वह युगा युगा तक बदनीय रहेगा।

निराला और उनके मेहमान

निसम्बर का महात्मा था। नौ बजे प्रातःकाल एक साहित्यकार निराला जा के गया पहुँचा। मन में सवाच और भय था फिर भी साहस ममट कर उसने द्वार खट्टाया। निराला जा स उसका परिचय मामूनी था और अपन आन का कोई सूचना भा उगत पहन में न दो थी अतएव उमका सवाच स्वाभाविक ही था किन्तु प्रयाग में क्या ठरेगा? इस समस्या के कारण वह महाकवि के द्वार पर आया। उस महाकवि का महत्प्यता और आत्मीयता पर भरोसा था।

द्वार खला महाकवि बाहर जाय और आगन्तुक का बिस्तर ऊपर में जान का आर्य किया। आगन्तुक न चरण स्पग किया फिर बिस्तर उठाकर ऊपर ल गया।

उद्दान क्या यह शाहू है स्यात माफ करके बिस्तर यहा लगा ना। गाम ना नख पर बिछा लगा।

आगन्तुक न तत् तण उनकी आना का पानन किया ।

बिस्तर तगा कर खली छत पर आया ता दंगा कि निराना जी एक तन्द पर सब बत् प्याज काट रह है । वह आश्चर्यचकित हाकर सब कुछ देख रहा था ।

मन्त्रावधि क घर का दयनाय स्थिति और उनक हृदय स्पर्शा शक्तिव का सार्विक स्वप्न ।

कुछ दर बाद निराना जा ने उमम कहा मै थक गया हू । तुम बाजार जाकर जाल तमाटर और हरी मिच ने आआ तुम्हारे निय एक तरकारी और बन जायगा ।

फिर उमक साथ पर उतान एक टुन्नी रग दी । वह चान्ता था कि उह पमा दन म मना कर त परन्तु व जानता था कि अपना रचग म वे किमी प्रनाग का विरोध नग महेते जनणव चपचाप बाजार चना गया । उम समय तिन म १० बजे का समय था ।

जब वह नीट कर आया ता निराना जी चौर म थ । तान तरकारिया और रात्रिया बना र थ । उमन कहा कि रात्रय में रात्रिया बना त् परन्तु उतान यह स्वाकार नग किया और गाता लकडिया फूक फूक कर गाना बनाते रह । यथापक बाच म राग छान्तर जाव जीर उमम एक गजन की प्रतिनिधि करानर नयामास्थि बम्बर् का भिजवा त ।

चार-पाच घण्ट बाद तगभग ६ बजे उनका भाजन तयार हुआ । सब प्रथम उतान अपन मन्मान का विताग नगन्वान अपन पन्नामा या अनितकुमार मुणर्जी का और सबम बाद म स्वय भोजन किया । भाजन म निवन्त शरर उतान जागतुक मन्मान का शरर घम आन का जाग्य त स्थि जीर रागत पर शरर का एक एंगा तवगा उम बना कर त स्थि ताशि व राग्ना न भूत ।

गम का मान शर वर व करार जय व शोग ता रगा कि व शर शरजार कर र थै । तन्द न थात श्रमा पन्त गा ता । ता रात्रिया रग्मा थै । एक तुम ता एक मै । मान व बाद नाग श्रद्धा जाग्या ।

दुसर तिन ६ दर प्रात उनका वाग्ना क विवाश मव । व घमन क निय जा र थ । वह ना र वग । बाव नाग जा

उसने कहा बहन अग्नी तरह और उनके साथ चल पड़ा। उस समय उनके गिर पर एक पुराना ऊना टाप था जिसके गत का आदक सा था। कमरे पर मन्ना सा तन्मत था और परा में वाता सा बहन पराना कपड़ा बना हुआ था जिसका पिछला हिस्सा नदारत था। उसमें उनपर परा का ब्रह्माग्नी साफ नजर आता था। जिन्दा का युग प्रबलक कवि निर्यात और हम भेष में? किमते अनुमान लगाया जाता कि हमने पाम जाट के कपड़े न साग ब्रह्म हाथ में धारता पराता हागा और बामारा का दगा में पानी के नियत नरमता रट जाना होगा।

आगतुक साहित्यिक सा चिन्ता विचार में उठा हुआ था कि चाय बान का खान आ गई। उहान सा कुहू चाय ना और गगा के बाध की आर चन स्थि। गग्ने में निर्यात जा भोजन गग्गर चन जा रह थ। अपने आप में बूझ और खाय स्थि।

जब वे गगा के बाध पर पहुंचे तो उदित हात सूर्य का आर तन्मत रह गय। सूर्य का किरणा के कारण कुहरा कम हो रहा था। वे गगा उनके कठोर जीव उस पर कुहरे का चारता स्मियाय मौल्य का स्वर वात— साहाय्य उन मुग्ध नर है। इतना ज्ञान देख अथवा नग भिन सकना। मुग्ध ता है ना तन्मि साहाय्य का गाम ना बहुत अच्छा हाता है। गाम का दूसरे बाध पर चर्चेंग। इतना कहकर चप न गय।

सौजन्य समय प्रगतिगत साहित्य की बात चलाता वे स्वयं कहने लग प्रगति वात पर सबसे पहला मैं निम्ना है। हम फार्म नग जानता। क्या किया चाय तुनिया एमी है जा जिना Pevelition के नग मानता। मैं घर चनकर तुम्हें जिनाकृता। इसका वात वे पुन चाय का दुग्ध पर आय और उग्धन चाय पा। फिर दूसरा चक्कर गगा निहार का लगाया। हमके वात घर आवन वे द्वार के गामन पर तस्ते पर बैठ गय। चाय रट में एक बगाला मन्नाय आ गय। उनमें बातचात करत करत निर्यात जा फिर चायबान के पाव आय। ताना न फिर चाय पा। तन्मि में निर्यात जा का दूध रट वाता खाला आ गला। उनमें बातें करत के गग उहान अपने महमान में क्या जाआ एक सर दूध पा आया।

वह खाल के साथ घर की आर चन पया। रास्ते में खाल न मन्नाय में क्या बावू जा। निर्यात जा निरे मन्नाय ह। उनका कविता के आगे दूध पान का भी

जागन्तुक न तत्क्षण उनका आत्मा का पावन किया ।

बिम्बर उगा कर खना छन पर आया तो दया कि निराता जी एक तल्प पर सब बठ प्याज काट रह है । वर आचयचकित हाकर सब कुछ देख गया था ।

महाशक्ति क घर का दयनाय म्रिति और उनक हृत्प्य मर्गी पत्तिक का सात्त्विक स्वरूप ।

कुछ दर बात निराता जा न उमम क्या मै थक गया हू । मुम बाजार जाकर आलू टमाटर और हरा मिच ने आभा तुम्हारे निय एन तरकाग जोर बन जायगा ।

फिर उमक राय पर उमान एक टुअग्री ग्य ली । वर चायता था कि उह पना दन म मना कर ने परन्तु वर जानता था कि अपनी क्या म वे किमी प्रकार का विराध नग मन्त अनएव चपचाप बाजार चना गया । उम समय तिन म १ बजे का समय था ।

जब वह नीट कर जाया ता निराता जा बीच म ५ । एन तरकारिया और रात्रिया बना रह थ । उमन क्या कि तान्य मै रात्रिया बना नू परन्तु उमाने यह स्वाकार नग सिया और गाता तकडिया फूक फूक कर गाना बनान रह । यरापर बाच म राग छात्कर जाय जोर उमम एक गजन का प्रतिनिधि तरकर नयामात्रिय बम्बर का भिजवा टा ।

चार-पाव पण बात तगभग ५ बजे उनका भाजन तयार हुआ । सब प्रथम उमाने अपन मन्मान का जितनाया तल्पचाने अपन पनामा या अनितकुमार मुगर्जो का और सबर बात म स्वय भावन सिधा । भाजन म निवल तकर उमान जागन्तुक मन्मान का तन्त घम आन का आन्त ट सिधा जोर कागत पर तन्त का एक एगा नकग उम बना कर ट सिधा ताकि वर गन्ता न भूत ।

एन्त का मान जाट बजे क करगत्र तत्र वर नीग ता तन्ता सि वर तन्तार कर रह है । तन्त न बात आभा एन्त खा ता । न रात्रिया रक्या है । एक तुम ना एक है । मान क बात नाट अन्धा जायगा ।

एन्त तिन बडे प्रात एन्त बाटरा क सिधाए सन । व घमन क दिय जा रह थ । वह ना ए वग । बात नाट जा

उमन कहा बहुत अच्छा तरह और उतक माय चल पया । उम समय उनके मिर पर एक पुराना ऊना टाप था जिम व गलत का धाडवर साथ थ । कमर पर मना था लम्पट धा और परा म बाग का बहुत पुराना कपड वाला जता था जिमवा पिछता हिम्मा नगर था । उसम उनक परा को बकाया साफ नजर आता था । हिदा का युग प्रवतक कवि निराशा और उम भय म ? किमन अनुमात नगाया गगा नि इसक पाम जा व कपड न हान वह हाथ म खाना पराना गगा और रामारी का गगा म पानी के लिय तरमता रह जाता गगा ।

बागनुक मात्प्यरार ग्यो जिना विचार म डूबा हुआ था नि चाय बाल का टुकान आ गये । उहाने गो कुल्हाट गाय ला और गगा क साथ का धार चन दिय । गस्ले म निराशा जा भीत गभीर चल जा रहे थे । अपने आप म डूब और साथ ग्य ।

जक व गगा क बाघ पर पहुँचे तो उदिल गत सूर्य का आर देखत रह गय । सूर्य का किरण क कारण कुहरा कम हा रहा था । व गगा उमक बागर और उम पर कुहने का चारता रमिवा क सोच्य का देखकर बाल— गगागगा बढी मुत्तर गगर है । इतना अच्छा दश्य अमन न । मिन सकता । मुवह ता है गो रविन गगावाग का गाम भा बहन अच्छा हाता है । गाम का हमरे साथ पर चलग । तना कहकर चय ग गय ।

सोचत समय प्रगतिमान साम्य की बात चली ता व स्वय कहन गय प्रगति वाग पर सबसे पहले मने निमा है । उस काई नही जानता । क्या किया जाय बुजिया ऐसो है जा जिना Revelation क नही मानता । मै घर चक्कर तुम्ह गियागगा । उमक बाद व पुन चाय का दुःख पर जाय और उःखत चाय पा । फिर दूसरा चक्कर गगा कितारे का गगाया । उमक बाद घर जाकर व द्वार क सामन पड तखत पर बठ गय । बाग दर म एक बगाना मन्गाय आ गय । उनम वागगत कर्त-करते निराशा जा फिर चायबान क पास आय । ताना न फिर चाय पा । तन म निराशा जी का दूध तन वाता न्वाता था गया । उमक बात करन क बाद उःखत अपन महमान म कहा जाभा एक मर दूध पा जाभा ।

यह खाने क साथ घर का आर चल पया । रामन म ग्वाल न मन्मान म कहा बाबू जी ! निराशा जा निर मन्मा ह । गगा कविता क आग दूध पान को भा

सुघ नहीं रहती। दूध दे गया वस ही पडा रहा। दूमरे त्ति मेरे सामन ही फेंका गया। भना ये भी अच्छा है बाबू साहब कि दूध फेंका जाय ? मैं बंद कर दिया। मुझ ऐसे महात्मा के पन खराब थाड ही करन हैं बाबू ! तुम्ही बताआ !

घर आ गया। ग्वाले से एक मेर भस का दूध लेकर कच्चा ही पी गया। वहा आग कहा थी जा गम करता।

धाडी टेर म निराला जी भी घर आ गय। रसोई ता निराला जी की आज्ञा स मेटमान न पकाई पर रोटिया स्वय उहान सेंकी।

आग फूकते फूकते तमाम राख उनके बाना म भर गई परन्तु त्मकी उहे रच मात्र भी परवाह न थी।

दा घण्ट म खाना बनकर तयार हुआ। इसके बाद उहाने जामन क निय एक अखबार बिछा लिया और फिर उम भाग और राटिया दा। स्वय जमीन पर बठ कर खान तग और बाल बपों तक साहित्य साधना म मेरा यह भोजन रहा है।

हिन्दू जगत का मूय—निराला चूल्हा फूक और सूखी बासी राटिया चबाय और कभा-कभा निराहार गंगाजन पाकर हा सताय कर सा जाय—यत् गण्य और स्वप्न का बाने नहा करन मत्य हैं। उनका जावन मजदूर का मा जीवन था।

रात म जिम समय मन्मान कच्चा नाट का करवदें बटन रहा था जोर निराला क बारे म माध रग था मभा जवानक निराला का भयकर त्मा न गान बानावर्ण का निम्नजना भग का। एमा त्मा मन्मान न और कभा नहा मुना था। उम त्मा क मम का निराला क अनिर्दिक्त और कौन ममयता ? फिर य बनी देर तन अन्तर बाहर धाने ज्ञान रह।

एक त्ति मन्मान का तबायन कुछ मगव था। निराला न खाना और चाय बन् कर लिया और स्वय दूध ताकर मन्मान क तिय रक्या। फिर उम माय म लकर धूमन निकन। गंगा क पुन क पाठ तक धूमन गय फिर लौट कर महमान म पूछा 'तुम यह मन् गग। आराम बग। मैं एक चकर और नगा आऊ। वे पुन बच मय।

गान्तर का मौट कर आत ता मन्मान का पम त्कर त्कन ज्ञान का कन। लकन ताकर दूध मन्म त्ति और पाकर अखबार पढ़न तग मगर निराला जा न

ता दूध भा नहा पिया और गाम तक भूमे ही रह । फिर उहान मूग का दाल और राटा बनान का विचार किया ।

निराला जो चौक म थ कि उमी समय एक प्रकाशक महान्य आ गय । वे निराला जा का एक उपन्यास छाप रह थ । उपन्यास का नाम काज कारनामे था और उसस समाज तथा राजनीति का खाखनापन लिखाया गया था । उसकी भाषा गला की प्रगमा कर्न ह्य प्रकाशक महान्य कहत गय निराला जा धारे धारे लिख रहे हैं । मूक म आकर निखत हैं । एक लखक भा द रचना हे लेकिन बाज ऐसा है जा बेजाड हागी ।

इसा समय गम्भार हाकर निराला जा न क्ता साहित्य माधना म बनता है । हम बेबन रूपया ता कमाना नहा है । साहित्य एसा दना है जा जनहित का हा और उसम कुछ जान हा पर लाग सम्यत हा नग ।

महमान न जान क निय बिना मागा ता बाल बच्छा ! बिस्तर बाध ला और दक्षा लिचडा बना है भूमे हा ता खा ला ।

महमान न क्ता में खाकर आया हू और फिर बिस्तर बाधत मगा । तभी निराला जा न क्ता य साबुत ता रख ला और फिर साबुत का आधी बट्टा उहाने महमान क सामन रख दी । तभा महमान का या आया कि साबुत की आधी बट्टी कपड धान न बच गई थी उन भा उहान लौटा लिया ।

उम समय महमान का समझ म यह बात स्पष्ट रूप स आ गई कि महावर्द्धित मक कमल लकर आन स इकार क्या कर दिया था थार भयकर सुर्गे म ख्यना फग काट हा आड कर सा गय थ ।

१०००००००००

महमान न उनका चरण रज ता । आगीवात् प्राप्त किया और चर्चिपनी

क रास म सावना आ बना जा रहा था । हम निराला जैसा कलाकार चाहे मिन जाय पर निराला जमा मानव नही मिन सकता । निराला का व्यक्ति के अजर मर है ।

वह महमान हिता क प्रशान नखक आ पदमिन्द्र गामा, कमाना म

निराला के प्रति प्रयाग के लेखको की उदासीनता

जसा कि ऊपर लिखा जा चुका है प्रसिद्ध लेखक श्री कमलेश जा का निराता जा क पाम कर्त्तव्यता तब रत्न का सौभाग्य प्राप्त हुआ। एक दिन वे प्रयाग में अथ प्रसिद्ध माणिक्यकारा में मित्रों के विषय में बातें उनमें से कई लोगों ने कमलेश जा से निराता जा का समाचार पूछा। उनके प्रश्न पर कमलेश जा का अत्यधिक जासूच्य और दुःख हुआ। उन्होंने अत्यंत पाल्य भरी दाणा में क्या जासूच्य है कि आप निराताजा से रत्न के जोर निराता जा का समाचार मुझमें पूछते हैं।

जब वह माणिक्य और समसभ्य कथन का प्रयाग के माणिक्यकारा के पाम कर्त्तव्यता से बातें करेगा।

उनका हम निराता से कमलेश जा ने अनुमान लगाया कि लिखा बातें अपने कथाकारों का निराता जाकर करने हैं। यह लिखा क लेखकों का सौभाग्य ही था। उन्होंने मान्यता लिखा कि निराता जा का वर्तमान स्थिति के विषय प्रयाग के ये माणिक्यकारा निराता जा निराता की कथा करेगा नया जानते।

अपराजेय स्वर बोध सधष

निराला जो गद्य के एक जनामे जीवित थे क्या काव्य में और क्या गद्य में उन्होंने एक एक गद्य का नाता-नीति का भावित किया है। एक गद्य का स्वर में उच्च हस्ता नया का मरना। वे गद्य के मंगल का जानते थे। उनका गति का कथन का जन्म प्रसिद्धा उनमें था। यह गद्य पत्तियां प्रसिद्धा माणिक्यकारा का अमरतात नाणिक्य के गद्य नया में उद्वेग है जिसमें उन्होंने मंगलवि निराता का अंगारक जावत का मना था है।

वास्तव में निराता का अपराजेय स्वर का गद्य वास्तव में गद्य का विममता के गद्य नया गद्य। यह गद्य में नया में गद्य नया गद्य में गद्य माणिक्यकारा का जोर निराता का मंगल निराता का कथा शान्तिवातन का गद्य नया गद्य।

उनका गद्य काव्य नया कृत्या का विममता कृत्या का जोर गद्य का मंगल गद्य है। उनका न गद्य का कृत्या न गद्य का अपराजेय और अमरता

रक्ता । एकनिष्ठ माधक क रूप म व जीवन भर तपत रह और इसा तपाग्नि व निराला का उनक जावन क अन्तिम काव म विकृत बना लिया । परन्तु पराजय उद्दान कभा स्वाकार नहा का । उन्ताने बडा गान क साथ परिस्तिनिया का डोना परन्तु पराम्म हारर उनम समचीना करन का कभा तत्पर नहा हुय ।

—नहा लघु मगप उनका अन्तिम नाम तन चना । अपन तद्द किमा प्रनाय का आधिक महत्पना गान और चदा उन्ताने स्वाकार नहा किया । जिम गान क साथ जित्ना भर विपत्तिया म लह उसा गान क साथ मौन का भा वरण लिया ।

उनकी आन्तरिक विनचना विकृति जार कुठा का नागा न पागवपन का सना ने गाना परन्तु किमा न बान्धविक रूप म उनक ब्रामन काल म उनकी मायता का निष्पाप हृदय म स्वाकार नहा किया ।

हमारे सांस्कृतिक भविष्य का प्रतीक निराला साहित्य

निरंतर पचास वर्षों तक निराला का विराध करन के पश्चात् जब पूजीवानी और सामंती सस्कृति व जन्मवन्तरा न यह समय लिया कि हिन्दू साहित्य समार म उम दद श्रना माधर का गायन का मिग पाना सद्यथा जन्मभव है तद्व द तन मन से उसक मच्च भक्त बन गय आर उस मगमानव महाप्राण आन्ति उपाधिया म विभूषिन कर मानिय मन्त्रि म उनका का भानि प्रतिगित्त किया और उनक तय घाय क पन्वान कहा यद्द ह्दय श्वता है उसका पूजा जाराधना का अधिकार केवय हम है ।

जन-माधारण क निय निराला की जचना जाराधना का निषध है परन्तु यद्द ठवन्तरा एक मात्र उनका भूत न कना जायगा क्याकि विगान जन ममृ का श्रद्धा और प्रेम की अवश्वना उनक बग की बात न्ना । साहित्य जगत म निराला क मधर्षों का जा रामाचकारा और हृदय विगारर कथा कही गद्द ह वन् समस्त जिन्ना प्रमिया और साहित्य मविषा क निय एक छकी चुनौता है ।

मनाकवि न अपन एक गात म विराधिया का उदय करक स्वय ही बग है—

निराला के प्रति प्रयाग के लेखकों की उदासीनता

जमा कि ऊपर लिखा जा चला है प्रसिद्ध लेखक श्री कमलेश जा का निराला जा के पास कई दिनों तक रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। एवं तब प्रयाग में अत्यंत प्रसिद्ध साहित्यकारों में मित्रों के नियंत्रण तथा उनमें से कई लोगों ने कमलेश जा में निराला जी का समाचार पूछा। उनके प्रश्न पर कमलेश जा का अत्यधिक आश्चर्य और दुःख हुआ। उन्होंने क्षणों के लिए अत्यंत पांडा भरा वाणी में कहा कि आप इत्यादिवादि रहने हैं और निराला जा का समाचार मुझमें पूछने है।

कमलेश जा और कमलेश जा के प्रयाग के साहित्यकारों के पास कई उत्तर न था।

उनकी इन उदासीनता में कमलेश जा ने अनुमान लगाया कि हिन्दी के अपने कलाकारों का प्रतिभा जांच करती है। यह निष्कर्ष केवल का दुर्भाग्य ही था। उन्होंने महसूस किया कि निराला जी की वर्तमान स्थिति के विषये प्रयाग के ये साहित्यकार निम्नलिखित २ जा निराला की कृपा करना नहीं जानते।

अपराजेय स्वर दीर्घ सघय

निराला जी का यह शब्द अनाथे जोहरा था क्या काव्य में और क्या गद्य में उन्होंने एक एक शब्द का जाला जोहरा की भांति जड़ा है। एक शब्द भी शब्द से उधर हटाया नहीं जा सकता। वे शब्दों के संगत को जानते थे। उनका शक्ति को कतन का अर्थ प्रतिभा उनमें थी। यह शब्द शक्तियों प्रस्थान साहित्यकारों में अमरनाथ नाथ के उमर के उद्धृत है जिसमें उन्होंने महाकवि निराला का अपराजेय शब्दों का सजा दा है।

वास्तव में निराला जा अपराजेय स्वर के लिए वास्तव में शब्दों का निम्नता के साथ साहित्य गया। यह यथाथ में था यह गुण न शब्द रूप में उन्हें साहित्यता न था जोर दिने स्वाभिमाना निराला ने कहा जात्मविज्ञान का शब्द न था रचा।

उनका साहित्य मात्रा तक विनृणाभा विनृणाया बुगजा और मधुपों में परिपूर्ण रचा है। उनका न शब्दों की प्रवृत्ति न शब्दों में अभावप्रस्त और अमरुत्

रखवा । एकनिष्ठ माधव क रूप म व जावन भर तपत रह और वसा तपाग्नि त निराना वा उनक जावन क अन्तिम कान म विकृत बना लिया । परन्तु पराजय उन्मत्त कभा स्वाकार नया का । उन्मत्त बड़ा गान क माय परिस्थितिया का छेता परन्तु परास्त हाकर उनम ममचीना करन का कभा तत्पर नहा ह्य ।

उन्मत्त तप मधय उनका अन्तिम स्वाम तक चला । अपन तद्र किमा प्रकाश का अधिक मत्पयता गान और चला उन्मत्त स्वानार नहा किया । निम गान क माय जित्ना भर विपत्तिया म रह उसा गान क मात्र मौन रा भा वर्ण किया ।

उत्तका प्राणिक विनयना विकृति जार कुटा का नागा न पागल्पन का मना से टाना परन्तु किमी न दाम्बिक रूप म उनक जावन कान म उनकी मायता का निष्पार ह्य म स्वाकार नया किया ।

हमारे सांस्कृतिक भविष्य का प्रतीक निराला-साहित्य

निरन्तर पचास वर्षों तक निराला का विरोध करन क पन्चात जय पूजावादा और सामंती मन्वृति क अव्ययनारा न यह समझ लिया कि लिखा साहित्य समाज म उभर उठे गना मात्र का माधव का मिटा पाना सपना असम्भव है तब क तन मन म उमक मच्च भक्त बन गय और उस मन्मानव मन्प्राण आदि उपाशिया म विभूषित कर साहित्य मन्त्रि म तपना का भाति प्रतिष्ठित किया और उमक नय घाप क पन्चात कहा 'इह उन्मत्त स्वता है इतका पूजा आराधना का अधिकार कवन हम है ।

जन-साधारण क निय निराला की जचना आराधना का निषध है परन्तु य उन्मत्त एक मात्र उन्मत्त भूत हा बना जायगा क्याकि विगान जन-ममू का श्रद्धा और प्रेम का अव्ययना उनक वग का बान नहा । साहित्य जगत म निराला क मधयों का जा गमाचकारा और ह्य विचारक कथा नहा गर् २ बट मममन् लिखा प्रमिया और साहित्य मविद्या क निय एक गना चुनौता है ।

मन्त्रवि न अपन एक गान म विरोधिया का उदय करन स्वय ही बना है—

निराला के प्रति प्रयाग के लेखको की उदासीनता

जसा कि ऊपर लिखा जा चुका है प्रसिद्ध लेखक श्री कमलेश जी का निराना जा के पाम वर्क दिना तक रुकना वा सीभाग्य प्राप्त हुआ। एक दिन व प्रयाग में अथ प्रसिद्ध साहित्यकारा म मित्रन के निये गयता उनम म कल रागा न कमलेश जी म निराना जा का समाचार पूछा। उनक प्रश्न पर कमलेश जी का अत्यधिक आश्चर्य और दुःख हुआ। उन्होंने क्षण भरकर अत्यंत पाला मरी वाणा म कल आश्चर्य है कि आप इतनावाक म रुकते है और निराना जा का समाचार मुझम पूछते है।

एक बट मय और ममग्रधन कल रा प्रयाग के साहित्यकारा के पाम वर्क उत्तर न था।

उनका रुकना उदासीनता म कमलेश जी न अनुमान लगाया कि हिंदा वाते अपन कलाकारा का कितना आदर करते है। यल लिना के लेखका का दुभाग्य ही ता था। उन्होंने मत्सूग किया कि निराना जी की वनमान स्थिति के निये प्रयाग के य ही साहित्यकार जिम्मेदार हुआ निराना की कल करना नहीं जानते।

अपराजेय स्वर दीघ सघष

निराना जी गला व यड जनाथे जोहंग थ क्या वापि म और क्या गध म उन्होंने एक एक गल का नाला-नोटर का भाति जल है। एक गल भी इधर से उधर हटाया नहा जा सस्ता। व गला व मगीत का जानते थ। उनका गति को कतने का अम्भन प्रतिभा उनम था। य चल पक्तिया प्रख्यात साहित्यकार म अमलवान नागर के उम तल म उद्धत है जिमम उन्होंने म्हाकवि निराना का अपराजेय तावाज का मना दा ल।

वास्तव म निराना जा अपराजेय स्वर व और वास्तव म रुक बडा निममता के साथ नाया गया। व यथाथ म ता थ युग न रग रूप म रुक मायता नया ता और निर म्वाभिमाना निराना म कभा आमविनापन ता युग नया रचा।

उनका साहित्य यात्रा अनक विवृणाभा रिचिनिया कुगभा और गधयो म परिपूर्ण रचा है। उनका न सकन ता प्रवृति न रुक म्हा जभावप्रस्त और असनुक

रक्या। एवनिष्ठ साधक क रूप में वे जावन भर तपत रह और वसी तपाम्नि न निराला का उनन जावा क अंतिम काल में विवृत बना लिया। परन्तु पराजय उहान कभा स्वाकार नहा की। उहान बड़ा गान क साथ परिश्रमिया का झेला परन्तु परास्त हानर उनन गमबौता करन का कभा तत्पर नही हुय।

उनका दास मथप उनकी अंतिम स्वाम तन चना। अपने तद् किसी प्रकार का आर्थिक म्नायता नान और चला उहान स्वानार नहा किया। जिन गान क साथ जिन्या भर विपत्तिया ने लड उसा गान क मात्र मौत या भी बरण किया।

उनका आत्मनि विरामना विवृति और कुठा का लागान पागलपन की सना दे डाला परन्तु किसी ने वास्तविक रूप में उनक जीवन काल में उनकी माया का निष्पाप हृदय में स्वाकार नही किया।

हमारे सांस्कृतिक भविष्य का प्रतीक निराला साहित्य

निराला पचास वर्षों तक निराला का विरोध करन के पश्चात जिन पूजावादी और सामंती मन्वृति क अन्तर्भरणारा न यह समझ लिया कि हिन्दू साहित्य समार में उस न्द श्रुती साधक का साधन का मिश्र पाना सबया अग्रभव है तद्व यत मन में उसन सच भक्त बन गय और उस महामानव मन्त्राण आदि उपाधिया में विभूषित कर साहित्य मन्दि में दवना का भाति प्रनिष्ठित किया और उमक तय धाप क पश्चात वहा 'यन् हमारा स्वता है अपना पूजा आराधना का अधिकार केवल हम है।

जल साधारण क त्रिय निराला की जचना आराधना का विषय है परन्तु यन् नरनारा एक मात्र उनकी भूत न वन्त जायगा स्वानि विधान जल गमू का श्रद्धा और प्रेम का अवलम्बना उनन वग की बात नग। साहित्य जगत में निराला क गमपों का जा रामाचारा और हृदय विदारक तथा कगी गर्भ के वन्त ममम्न जिन् प्रमिया और साहित्य गविया क त्रिये एत खनन बनौता है।

मन्त्रावि न जपन एक गीत में विरागिया का तन्व परत स्वय न वन्त ३-

समथ क्या वे सकेंगे भारू मनिन मन
निगाचर तज हत रह जा वय जन ।
धय जीवन कहा मान प्रभातधन ।

भारू मनिन मन निगाचर तजहत वय जन आनि इन विगणना स महाकवि न अपन विराधिया को सम्बाधित कर उनका स्वागत किया है ।

इहा माहित्यिक ठेकेपारा न यह नारा लगाया कि निराना-माहित्य का जनता स दूर रक्खा । निराना रहस्यवादा साधक है और भारतीय मस्वृति हम रहस्य की साधना है ।

पूजावादा सम्मृति क निय सबस बनी सफरता थीर साधकता यह है कि मनुष्य स्वाथ युद्ध म विजय प्राप्त करे और उमकी सबस बडी असफरता और जमायकता यह है कि दूसरा क दुख म दुखा हाकर वह अपने स्वाथ का भून जाय । मनाकवि न इम विषय म स्वय हा अपनी भावनायें यक्त का है—

क्षण का न छाना कभा अत
मैं लख न सका वे दग विपन्न
अपन आमुआ अत विम्बिन
दख है अपन हा मुख चिन ।

कवि न दूसरा का सम्पत्ति हडप कर जान-दागान करन की भावना कभी नही रक्खा अतएव अपन आमुआ म उसन सदब अपना ही मुख और हृदय झलकते दखा । महाकवि क य उचनम विचार यद्यपि कि पूजावादा बग का भावना पर कुठाराघात करत है परंतु मानव समाज क निय य अमर आदग है ।

निराना क विराधिया न कवन उनका क्रानिकारी महत्व हा ममज्ञा अतएव जनता म भा म्मा विचारधारा का पनपान फतान का प्रयत्न किया । उहान निराना का विराध करन म का कमर बाका न छोडा ताकि साधारण जन बग उनस प्रभावित न हा ।

उनक विराध म नानान कर् पत्रिकाआ म दख छाप गय और उह कम्युनिस्म कय गया ।

लेकिन जिस नतिक मूया और तत्वा व निय निराशा कभी नडा था जनता उहा व निय आज लर रही है। उनका दग भक्ति का आधार व्यक्तिगत सम्पत्ति नडा थी। यन् कारण है कि उनके जनवादी विचार गराव मेहनतगर्ग जाना की सम्कृति के अत्यधिक ममीप रहे।

य सारी बातें वास्तविक रूप म मिद्ध करती है कि वे हमारे मास्त्रतिर भविष्य क अग्रदूत थ।

आज जनता अमनी-नवली का भेराभाव समझाकर अपने वट अनुभवा की षोटला खालर एक्ता एर मगटन के मामों पर गतिगीन है। उम घातमाक तुनमी और व्यास म विगमन क रूप म जो कुछ प्राप्न हुआ है उमा क आधार पर वट मास्त्रतिक निर्माण का बागडार समालेगी।

निराशा जी मदक नि स्वाध भावना म ऊच-नीच का भेराभाव मिगाकर सच्चा मानवता का वापस रखन क निये लडत रह।

वतमान गासक वग जा आज मिगमनारू है निराशा न मना वास्तविक रूप स्वतंत्रता क पूव ही समय निया था अतएव उगने पूजीवादा ननाआ की आशाचना करते हुए १९३१ म निया—

अभा ता त्रिद भारत क नता भा घना है। जन् नता नाभ का पूण त्याग न कर सक वहा अनुयाया अथवा धन क बड-व उतराधिकारा कम व अरिकार छाड लेगे ? अभी ता मन्ना म रहनर कुटिया का मर करके गेहान दगन और गेहानिया का उपरग दत है—पुन मास्त्र पर धमण करा हुय।

मह गिभा नता नगी गिभा का एक शास्य है।

उपरास मछान मुना प्रेमचद का भानि निगना जा भी दूरगीं और निर्भीक माहित्यवार थ जिन्नि अपन विगत भूत म भविष्य का दगन रर निया था। गामक वर्ग द्वारा निराशा को वास्तविकता का उपमा और पूजावाग लेखवा द्वारा निगना का मापनाया का सठनान का मनी रहस्य था।

निराशा का समूचा माहित्य गाम्नापवाग गापण का निमम आशाचना करना है। उनके अपसरा एव अल्का आनि उपयाया म अग्रजा राज क प्रति घृणा एव

जनता द्वारा उसके मन्त्रिय विरोध का पूण जाभाम मित्रता है । त्ति व त्ति जनता का जनवादी म्बर पुष्ट ही जाता गया ।

उनकी सेवा चनुरा चमार बुलना भात जाति रचनाआ म तान तान जनता का सामिक चित्रण हुआ है ।

उनका प्रभावती म हम मध्यकालीन समाज क सामाजिक गायण का रूप रखते है । राम की गति पूजा और तुलसीदास काय मन्त्रन म नयी वार भावना का प्रस्फुटित किया गया है ।

स्मरणाय मत्य है कि निराता निपथ क कवि नता है । उनका वाणी मीत्य एव प्रम की जन मुनभ कामना प्रकट करता है । यदि वेग्य आर विप्लव का गजन करते है ता दूसरा आर जूहा का कता क स्वप्नि ममार म भी तरत ताव पन्त है ।

वे जावन भर अपराजेय कवि रत । आज भी उनका निरन्तर सघष साम्म उत्साह और अमीम गति हमारे निय प्ररणा का मवाधिक प्रभावगाना प्रतीत है ।

एक बार अपना अस्वस्थता का त्ता म तुलसी जयन्ता क पुनात जवमर पर उहान कहा था त्म त्म गय है । टट टट चक है त्तिन चक नता है जीर न हिदुस्मान का जनता जका है । गरात है बन्हान है गताई हुई है त्तिन उमका सर नता जका । जीर एमा हा जनता क प्रतिनिधि कवि है निराता ।

निराला जी सवा साल से बीमार थे

सन ६ क अगस्त मन्तन स निराता जा अस्वस्थ हा गय । उनका मानसिक दगा अत्यधिक विगष्ट गर् था । अपना वादरी का त्खाजा बन् करक क नग्नावस्था म पन् रत्त थ । उनका बाने अग्यता आर बन्का भन्का जाता था । कुछ त्तिना तक उनका एमा हा म्भिति रता । दका आरम्भ हुई ता उनका मानसिक दगा म कुछ सुधार हुआ किन्तु गारासिन् साधिया क कारण व तुन्न तान थन गय । त्तिन् न बताया कि उनका बामारा असाध्य और गम्भार ता चका है । क गाव जीर जनात्तर राग म प्रमित थ । मार गगर म मूजन जा ग था । त्म राग का कारण यहुन तिनार और हृत्प्य क पाय रत्त मचार म र्हावत जाता था ।

मासा बल आता था और मास लन म तवनाक नाता था । मुक्ति म कभा घण्ट जाघ घण्ट आये नग पाता था । हनिया ता उनका पुराना मज था ही । उम समय तान-तान तवरा का तवराज चन रन था । तवरा तना उत्तर प्रदेश क भूतपूर्व मुख्य मन्त्रा तवरा सम्भूषानत प्रयाग जाय और उतान निराता जा का तवा तथा परामग त रि यति निराता जा अस्थान नग जाना तान ता तन तिय निवाम स्थान पर त चिनिमा का उचित व्यवस्था का जाय । मुख्य मन्त्रा था चन्द्रभानु गुप्त न भा मवा और मन्त्राग का वचा तिया ।

तमन म प० था नागवण चतुर्वेण भा आय जाग निराता जा त भा मवा-वस्था का तव भात का । त राममनार तानिया तथा प० कप्तनापनि तियाठा भा मन्त्रावि का तवन आय । धामना मन्त्रावी वमा और था मुमित्रानतन पत का दयनग निराता जी का तमन वण म्बर पून —

तम रह न रह

तुम नतामित रहा तजार वरन ।

उहा तना भारत क राष्ट्रपति डा० राजद्रप्रमाण भा प्रयाग आय हय व किनु उह मन्त्रावि का तमन का अवराग नहा मित मता । मितता भा कता म यस्तना व कारण फिर भारत का राष्ट्रपति मन्त्रावि का बुनिया म ? अजान गत था ।

उपयोगा तानप्र तवाजा थार मवा-मुथपा त तरण निराता जा कुठ कुछ स्वस्थ हा चन किनु कुठ स्वस्थ गत हा उहान तवाजा का उपयोग वन कर तिया ।

१/ जुना ६१ ग पुन व जम्बय तान गय । उनक परा म सूजन आन गगा । कप्तनापनर जा का कि चिनाजा न जा घग । उतान तुगत प० थानारावण चतुर्वेण का तम रि तनि का सूचना त और तवा कि मुख्यमन्त्रा म कप्तन तिया निपुण बापरी हासत का बुतावर निराता जा का तियाता थानिय ।

मुख्य मन्त्रा श्री चन्द्रभानु गुप्त क आता म तानपु मन्त्रित गतज क तक्टर था क गन गा १ अगस्त ६१ का निराता जा का दमन क तिय प्रयाग परार । उतान निराता जा क निजा चिकित्सक था वृजगिरातान डारा म्यिनि का जान वाग का और निराता जा का तया । प्रयाग क मिविनमजने तथा तनक मन्त्राग डा० तुम्बा श्री उम समय परामग क तिय तपस्थित थ ।

इन नागा ने निराता जा के खून का जाच का और हृदय का एक रे करके कुछ नयी दवायें देने तथा उनके पेट में पाना निकालने का राय था ।

उह दवायें दी गया । खून का जाच ठूँ मगर रात में उनका बचना बन्द गया और उगान डाक्टरों दवाय प्रयोग करने में आकार कर दिया ।

कमलाकर जा ने उनमें दवायें लाने का बहुतरा जाग्रह किया मगर वह किमा भी कीमत पर राजा नहा हुय और वह बाल पहन वाली दवायें थे वेगें ये दवायें नहा जन्म हैं ।

पहले वाली दवा नष्टान के अजेकान व जिममें उक्त पणाव अधिक मात्रा में हाता था और पेट का सूजन कम था जाना था किन्तु उक्त अजेकान में गुर्मे में तरावी भान का भय था अनिय कुछ डाक्टरों की राय बन्द अजेकान स्न का नया था । लेकिन निराता जा का जिद्द थी कि वे वही अजेकान नगवायग । इसी उधडवुन में उनका अपचार बन्द था गया । उनका बामारी दिन ब दिन बन्ती चली गई—जानत गम्भार और चिन्ताजनक जाता गई ।

वास्तविकता ता यत् है कि पिछले ११ १२ वर्षों में महाकवि जब जब बीमार पड किमा ने उनमें इताज और मवा मुद्रणा के प्रति गम्भीरतापूर्वक रुचि नया दिखाई । उनके जिनन था निकट परिचित भाई म आर में उलासीन थी रह । राज नतिक नागा से ता किमा प्रकार का आगा निरयथ था था किन्तु साहित्यिक बाधुआ ने भा महाकवि का अपना का ।

कमलाकर जा का परेगाना जिना दिन बन्द रना थी । एक दिन निराता जा ने उनमें क्या—यदि तुम मुख व हा अजेकान नया नगवाभाग ता भरे पाम कुछ हय हैं मैं स्वयं हा व अजेकान नगवा नगा ।

कमलाकर जा ने धय स्न हुय क्या—मैं आपक निय अजेकाना का व्यवस्था कर रहा हूँ डाक्टरों में बातचात था रना में आपका जाग्र था अजेकान नगवा ।

डाक्टरों का राय में पुन उह नष्टान के अजेकान नगन नग मगर पन्त का अपना स्नका मात्रा कम कर था गन था ।

डाक्टरों का राय में अब तक निराता जा के पणाव में विषय विकार ने उत्पन्न

ना प्राय तब तक उस इज्जतान के उगन में बाध पड़ नहीं था। इज्जतान उगन के पूर्व उनका पगाव का जाच करा जा जाता था।

उस उपचार में उनका पाथ पुन घटन लगा। ना मरान के वाच व बाधा कुछ स्वस्थ हो गये।

निराशा जी की अस्वस्थता के अंतिम मार्मिक दिन

अपना छाटा मा बापरा में मरणादि का जीवन घोर प्राण बुधता-मा जा रहा था। व पाता में छपतात हय करवत बलन रू थ। जिन्गा बाग मीन में ना नगा हुं था। वे सिमी मा कामत पर अस्पतात जान का राजा न थ जवनि अस्पतात जाना उनक निय जखन आवश्यक था किन्तु उनक मन्व भवक और निषा श्री कमतागकर में उनका थ मार्मिक तपन दखा न जाता था वचार पाक में हुं थय बा उपाय माच रहे थ।

निराशा जा करातन थय अगन बिस्तर पर रू बठ और धान-कमतागकर मुष मा जान का बाई रवा ना ना न ना ता थोपा गगव न मुझे पिता न मैं मा जाऊगा।

गगव रवा उस समय और भा मतरनाक था। बीपनाय हुय कमतागकर न नुरल फान करक डाकर ना बुवाया और फिर मरस्वता सम्पाक श्री थानारायण चतुर्वेदी का फान प्राग निराशा जा का गम्भार स्थिति बनार्। चतुर्वेदी जा उन निना उगनरु में थ। व मरणादि के अत्यंत निकट मित्र जीर गभचितक थ।

उस समय निराशा जा का हनिपा बला बुरा स्थिति में उन बाधा था। उनक बड़ हय उर भाग में नाभि न कराव प्राण बरहा की तरह बाहर निकला हुआ था। रात भर हनिपा का जाना थाया में पकड़ हुय व दू म छपटात रहे। अमह नाय रू में याकुन नाकर व रा पड।

थानारायण चतुर्वेदी ना न कमतागकर का निराशा जा का तलान हा अस्पतात त जान का आर्य थिया—किन्तु व अस्पतात जान का कतर्द तदार न थ। उनका

अनिर्णय म उह अस्पताल न जाना मवथा जमम्भव था । शक्करा न भा जनम अस्पताल चवन ना अनुगध किया था किंतु उनका एन ना उत्तर था—

I want to die in peace I will not go to hospital I will keep my vanity even at the cost of my life

कमनागकर न पुन फोन ग्याथा और रामना मनात्वा कमा नगर प्रमुख ना वानकृष्ण राव ना उद्यतारागण निवाराना नात्र प्रम क मनतर ना विनाप्रमात् जिनाधान जीर निराना जा क गिप्या ना जयगापात मित्र तथा डा० गिबगापात मित्र का उनका गम्भीर स्थिति की सूचना दा ।

मार मुह्लत भर म ना पय फना जीर ना मनाकवि क निवास स्थान का आर लोड पत् । भाड ना भात् तमा ना गर् । स्त्रिया कने वृड कीन ऐमा था जिमक चन्द्रे पर विपात् की दण्ड न ना जिमका जाया म जामू न टपन रहा ना । वे मभा क ना प्यारे थ । उम समय नागा क मर पर दना गन् दा— गय ! य क्या हुआ !

जिनाधान न जात ना कमनागकर जा म पूछा— आपना पत्र कन हा तो मुझ मिना था जिमम आपन त्रिया था कि निराना जी जब पत्र स काफा स्वस्थ हा गये है उनक उपचार क त्रिय म समय जमिण हाथ की आवश्यकता नना है । आज मन्मा क्या हा गया ?

वाम्भव म निराना जा स्वस्थ ना चन थ । उनक गगर ना सूजन जीर पत् का गाय हट गया था । व खान पान म मयम रखने थे । कवन फन जीर दूध म्स्तमान करन थ । पूर ना महान एम हा गुजार मगर कमजोर अत्वधिक ना गय थ । दुबडना क कारण हनिया एकम प्रकट ना और हनिया न हा उह धावा निना ।

रामना मनात्वा कमा ना वानकृष्ण राव तथा जयगापात जा न नम अस्पताल चवन का हजार मित्रों का परन्तु मर व्यथ ग् । उगान किमी का अनुराध स्वाकार नना त्रिया ।

जब तक ना शक्करा भा जा चन थ । ना नयना जीर शक्करा तुम्वा । मरक जरावा निराना ना क त्रिया चिकित्सा ना कत्रविनारावान भा उपस्थित थ ।

उन नागा न कमतागकर म क्या कि निराता जा का गाम्नातिगीत्र अस्पता न ल
चनिय एक क्षण ना विनम्य भा घातक है। अनिया क जापरान म जितना ना दर
हाया उनना हा उनवन बल्गी।

कमतागकर ना न उह निराता जा का अस्पता न जान का जिह वनाइ जार
रहा नि पन्ति नी क मन म इन समय यह धारणा बन गई है कि उह यह कण
ट्टा न हान क कारण ना रहा है क्याकि बार बार व ट्टा नान का दवा माग रह
थ। उन आप तक सताप क गिय उह काइ ट्टा नान का स्वा दे द क्याकि उनका
ट्टा पेगाव पिछन अटगरह घणा म वन है।

ट्टा हा नान क निय उह दवा द ना गइ। नाकर यह कहकर चन गय कि
जितना जन्नी हा मक उह अस्पता न ना गय।

थाना म वात निराता जा न क्या याकुतना म कमतागकर म कहा तुमन
ट्टा की ना मुझ पहन बादा नना ना मम ता कुठ न नागा।

जाप थाना मत्र कर। कमतागकर जो न रुव कण म घय लिया।

सभा परेगान थ कि जाखिर निराता ना का अस्पता न ल जान क निय किस
तरण राजा निया जाय। समा बीच टा० मिथा क साय श्री वानवृष्ण राव न जाकर
पुन क्या मी साथ म अम्बुनम कार म्चर जीर स्त्ररवाहक तथा टाकर भी
नाया ह। यदि जाप महमत हा ता निराता जो का माफिया का अजकान कर
बगारा का हानन म अस्पता न उठा ले चनें।

नाम आन का दना का बहाना बनाकर उह अजकान रगा लिया गया। आध
घण क अन्तर गावधाना सं मारा कायवाहा कर लेन का जाण दकर डाकट चना
गया। निराता जो का नाम आन लगा। नाग उनक पूणत सा जान का प्रताक्षा करने
नग ताकि उह अनजान म अस्पता न ल जाया जा मर।

१२ अक्टूबर, ६१

१२ अक्टूबर का निराता जो न नाम पुनवा रन अपन मिर का
बान घग्वा लिया मगर गढी रन ना। वे जपना माग राम स्वय करन नग।

व भाजन पानन म बहुत निपुण थ । वामारा क टिना म भा बहुवा रविवार क दिन स्वय नी विधिपूर्वक भाजन पनात और ब आनत तथा स्नपूर्वक अपन प्रिय जना का खिनात । स्वय ता समयिन भाजन ही करत व कथाफि जस्वस्थ थ । डाक्टर न उह पूणत जाराम करन का ताना की वा मगर अपनी च्छा क मामन व किमी का न मानत थ ।

१ अक्टूबर का १ बजे म ४ बजे गाम तक गगातार चार घण्टे तक ब गान्त पकाने म गये रह । जागत म चह्हे क समाप कुर्मी पर बठ हुय व गोप्त पका र ४ । कमतागकर जा न उह मना कर लिया पर वे न माने । चपचाप अपने काम म गये रहे । कुर्मी म उठ गठ कर जब वे चल्ह का नकटा ठाक करन गते तब उनका हनिया पट स नीच की जार वार वार नटक आता था ।

माम पक जान क वात कमतागकर क बहुत अनुराध करन पर भा वे नहा मान और जमकर खाया । यथा उनका अन्तिम माम भाजन था ।

रात का तम बजे क बगब उत वचना महसूस गान गगा । कमतागकर जो ता पहन ता स सगाकिन थ । उहान निकट जाकर पूछा— पडित जा क्या बात है ? आपका क्या तकलाफ है ?

निराना जा न उनका अनुराध न मानकर माम खा लिया था । अतएव अपनी पाडा का त्दान का प्रयाम कर सकाच स वाले कुछ नहा । मैन बाजार स लकर एक सब खा लिया था उसम प्वातन था उसा का प्रभाव मानूम पडता है तनि चिन्ता का धान नहा । तुम जाआ सा जाआ ।

कमतागकर जा न टाक्टर का बुनान का बात कता ता उहाने मना कर दिया और उह मान क निय भज लिया ।

रात म गगभग १ बजे व भयकर रूप म रात तथा कगतन गग । वे अमह यत्रणा म छटपटा रह ४ । उनका हनिया एकतम कगत न गया था जोर जत्र जापरेगन हा एकमात्र च्चकार था । कमतागकर जा न जस्पनात चनन का कहा ता व बिग गय । जल म हनाग टाकर कमतागकर जा शक्त्त का बुनान निकन पड ।

वचार बात्त निकन ना न पात्र थ कि मूमतागार पाना परमन लगा । व किचत्तय विमू म मर ४ । उनका पना न जाग जनाकर हनिया का सँका

निराता जी का कुछ आगम मिता और व सा गय । उह घण्ट बाण पुा व जागे और दद न चित्तान गय ।

६॥ बज प्रात कात कमलागवण जी न भिवित सजन का फाल तारा इस गम्भीर स्थिति म सुचिन्ता क्रिया पर व यन् कर्कर जि यह मजगी कम है अपने सहायक १० नथाना का भेज रहा हू । वे हवाक अड पर प० नहू का स्वागत वरन चन गय ।

अत्यधिक घेन का विषय हे वि मरत हुय महाकवि क प्रति यन् उदासीनता थिया कर भिवित मजन महादय प० जवानरान नरू क स्वागत म चल गय । क्या एक अकल उनक न चान म नरू क स्वागत म क्या हा जाता । मगर उमरा भी क्या कमूर प्रजातत्र क नाम पर गजकाय पन्नाधिकारिया के लिय महान नेताजा का मनामा देना भी ता आवरण हाता है । कितनी ब्रजाव वान १ ।

एन आर भारत का युग प्रवक्तक कवि मृत्यु क मुन म वा और दूसरा और प्रघात मना क स्वागत म राग ह्योत्तमित ५ ।

काइ तान घण्ट क बाद १० नथाना आय । निराता जी का माफिया का अजेवगत दिया गया और उह बहादा का त्ता म जम्पताल न चनन की राय हुई ।

मृदुचर चारपाई म उगावन उवा ता उन् त्त पर चित्तान ता प्रवत्त किया गया वे क्वातर चहन पढ और चारपाई का पानी पकड कर जत्त गय । मारा प्रवत्त विपत गया । फिर निराता जा वाने मुन गाति म महा मरन ता में कहा नहा जाउता । यह कर्कर उगतन मयरा हटा थिया । फिर व सा गय । कमरे का दरवाजा बन्द कर थिया गया । बाहर ताका की नाड बन्द रहा ता ।

गाम का चार बज १० नथाना पुन लखन जाय । कर्कर न उनक हनिवा पर गय फरने हुय कहा आने मुतामम पन् गई है । पल्लि जा का चान अछा मालूम पढ रहा है । इस समय यन् मगर क बाहर ह । सब म प्रमत्तता का चहर दीड गई । मन्त्रवि मीन क मूह म निरतन आय थ ।

जमर बाण निमन जा और गाथिय सम्मनन क मन्त्रदक मथी था रामप्रताप त्रिपाठा उनम भितन आय । निराता जा न उन् प्रणाम का उत्तर दवर अपन पाम बटन का सक्त थिया । निमन जा न कुगत क्षम पूण ता चान जब ता टीक हू आज बहा बट्ट था ।

आपरेण हा जान पर व खतरं म न्मणा क न्दिय मुक्त हा जायग इम वान का विन्वास सभा का था जाणव तागा न पुन चचा चनाइ ता निराता जा था म स्वरा म वान—आपरेण ! नही आपरेण नहा तागा और न म्म नान जाउगा । म्म इस यापि म मुक्त ता हाता चाउता हू नमिनि आपरेण म नना । अत्र म्म गगार का माउ नना रना । पूना हा गया हू ।

अतिम काल मे भी अतिथि सत्कार न भूले

माफिया क कजकान क कारण उनका जालें म्म म्म वर खनता । उम् उम्न क न्दिय क्वा गया मिन्तु गिष्ठाचाग्वा वे चारपाउ पर वर र्ना । म्मतागवर जा न निवत् आकर क्वा पत्ति जा आपन क्वा म कुद्र भा न । गाया है । घाता गम दूध न आऊ ?

तव उम्न वगन कः आनभारा मे तम्बाकू जार चनोटा निक्ताता जीर निमन जा का खनी बनान क न्दिय न्दिया । तम्बाकू खाकर उम्न अपन आपना चतय अवस्था म तान का प्रयत्न रिया । फिर ब । जार मजन उठाकर म्म साफ रिया ।

कम्तागरेर जा न उम्न एन प्वाता गम दूध ताकर रिया । अपन हाता म दूध तकर उम्न निमन जा जीर विपाता जा क न्दिय चाय तान का जाउता रिया ।

अपन म्मभावानुसार व अनिधि सत्कार करना म्म समय भा न भूव । त्म एण ता उन तागा क न्दिय चाय जा ग्म ।

व दूध पः चर ता म्मतागरेर जा न क्वा पत्ति जा क्वा म्मजन बनान म जापन ता तान घ्म जा म्म रिया उम कारण आपना क्म व्म । अब आपका अपन स्वास्थ्य क प्रति मावधान ता जाना चाउता ।

निराता ता मुक्तराय जीर वाले पूर पाउ गण्ट उम थ क्वा । व । उनका अतिम मुक्तराउ था ।

रान म्म न्क न्दिया का कम्म म्म क्म क्म बाप रिया गया । जय तव व मा न्म गय न्क पर न्मता जान र्ना ।

१४ अक्टूबर, ६१

प्रातः काल निराला जी को भयंकर खामी था। उठाने खासत त्तुय कमतागकर जा का पानी का पुकारा। वे दुःखाने म उह मुहल्ल की अय नडकिया की भाति बाबा कन्ते थे। निराशा जा का उन पर अमीम म्मह था। शम्भव म वे देवा स्वप्न महिा है जिज्ञान अपन जीवन का बन्तुरा समथ महारवि को मवा मुश्रया म उगाया। निराशा जी न द्म म बरात्त हुय उनम क्ता जा ल्म मुञ्ज पहन हुआ था वहा द्म आज फिर गरू हुआ। क्त वाला दरा मुय फिर पिना ल जीर कमतागकर न कह दा कि मर तिय एर राता कम्बन गा लें। एर प्याता अतार रा रम भी श्म ममय मुझे पिला दा चाप तहा पिऊगा।

कमतागकर का पला म य उनका जनिम बात थी म्मक बात् उनकी चेतना जाता रहा। इसके बात् व बन्त बुतान पर भा वान नगी।

एगा एन्वामे हाता था कि उनक गुर्णे न अपना काम करना बंद कर दिया था वपादि चौबाम वण म अधिन यतात हो चक थ उन् पगाय तहा हुआ था।

नेष्टान व एजेकान म उनक गरीर म तान चार मर पानी प्रनिष्ति पगाय क रूप म तिक्रता था एम त्रिया म गुर्णे पर त्तना तार पडता था कि व टूट गय थ। म्मके पत्रम्बरूप गूरिक त्रिय रक्त म पतन उगा था।

ममाचार पत्र म निकन चरा था निराशा जा जीवन यनर म बाहर किन्तु पवापन वे पुन गन्र खतर म पन् गय थ। उनक म्मन्धिया और गमचितता का पुन एम रिषनि की सूचना ली गई।

वे अत्यधिक चंचली व कारण गय्या म बात्-बात् उठकर पत्रया मार कर हाव देव कर जन्ते य और फिर न्म जात।

जब उन्ने प्यात म अतार का रम त्रिया जान उगा त्त्व एहान उम गय म टटावा त्रिमम आभाम हुआ कि उनका जागा का यानि भा प्राय बुग चुकी है। गूरिक त्रिय व्यापन का यह पक्का श्ममाण था। उहू मरणात्तन पात्त हा र्त्ता थी। अपन पत्थर म बडे शानिया म्म व बार-बार हाथ फरते परन्तु उनका मुय न अय बराह भा न निकरता था। वे मन्तगातता का अन्तिम सीमा पर थ। त उनक न्माम

आसू थे और न मुझ पर हाथ और चाख । बिप का शरीर म मम ह्य वे किम प्रकार मृत्यु म नड रह थ ।

उनकी क्षण प्रतिक्रिया गिरती हुई दगा का देखकर कमनागर जा न उनम वहा पति जी यग की वायु गदा ग गई है । यदि आप जाना न ता आपका स्वयं हवा म ने चना जाय—हम लोग का कुछ और मवा तथा उपचार का अवसर न ।

न अब न जा सकते हा । उहान आज्ञा दा ।

किंतु डाक्टर न निराणा प्रकट की अब न अस्पताल ल जाना वकार है । इनकी किन्नी का फवगन रुक गया है । नड प्रगर अनुकून नगा है ।

अत म गुरूकाज और मनावन वाटर घटाने का निश्चय हुआ । बन्ती हुई बेचैनी के कारण वे क्षण-क्षण उठन-बन्त ।

गुरूकाज गगान के निय पाच यक्तिया न उह पकडा दबाया । उस समय का बडी दयनाय स्थिति थी । वे कह रह थ दण्ड मुझ उठाआ नल मुझ छडाआ । य ही उनक अन्तिम गण थ ।

गुरूकाज गगाने व निय उह रजवगन दकर बहाग किया गया । उनकी चतना फिर मग के निय जाता रहा । आक्मीजन भा लिया जाने गगा । उनकी नाक म आक्मीजन का ननिया गगा टूट थी और बाग पर गुरूकाज वूट वूट रिम रग था ।

निराला के जीवन की अन्तिम रात्रि

निराला का मृत्यु म वचान का काई उपचार न था । उनका स्थिति कागू व बागर हा चका था । नखनऊ मस्किन कात्रज व डाक्टर भा जवाब न चक थ । अब मणकवि का जन निवृत्त था । उम नर भयानक रात्रि म निराला का गथा व समाप श्री मौनरकमा रा जयगाथान रा पन्मधर और था कमनागर जा गगर गाक म हूव उपस्थित थ । भागम का नागि व गूना की मज पर पड न्य थे । उनक अधजाविन गगर का त्रिताय रसन व निय घण्ट घण्ट पर उह कारामान का रजवगन गगा लिया जाता था । डाक्टर न बताया था कि नम रजवगन गरा वे लो-नान त्रिना तव जाविन रकम जा सकन है ।

लगभग २ वज्र रात्रि का उनका माम उलड़न गया और गले में घण्टाकार गुरु हा गइ। उह अज्ञान गगाना बंध कर दिया गया और नाक में आक्माजन का नती निरान ला गई। कमलाकर जा ने कहा अब इस श्रिय काया का अधिक दुगति न का जाय और उनका गानि में रम्य जान श्रिया जाय। वह गानि क निय हा अस्पृशान नया गय। उनका श्व काठरा की जाजादा अधिक प्रिय था। एक आज्ञा परिण का तरण उहें उड जान दा।

१५ अक्टूबर, ६१

हिमालय घरती पर लेट गया !

एक सुय श्रय हा रण या जोर दूमरा अस्त। कितना हृदयविदारक और कारुणिक दय था। प्राण कात गाण ट वज्र महानवि का शरीर गेंठन गया।

जपन शाना मूम हय शया म उहानि पूना हुइ अतश्रिया का एक बार पकडा। उनका अत एकत्र निरट था।

गान बजरत पचाग मिनट पर उह भूमि गय्या न दा गई। भूमि गय्या पर आन पर उनका सासा का गति कुछ ठाक न गई। विकृत मुय मण्डल मुदर तथा गात न गया। प्राय दो घण्ट तक गान भाव ने पन रहे।

शमा मध्य श्रा जयतापान राम का गति पूजा का पान उनक समीप हा बठकर करन लग। गाना पान वेत्तत्र तथा तास्यानुमार गऊान स्वणदान आनि क्रियायें का जान गया।

ना बजरत १२ मिनट पर उनक दाना जघखुन नन एकत्र बट हुय जोर फिर एकत्र श्वन फिर बण हा गय। श्रा कमलाकर न उनका जाय क कार म डनकने हुय आमू का जतिम कण पात्र।

कमलाकर ता का पत्नी उ निगना जा क मुक्त म पुत्रमा जार गगाजन डाना।

श्री बजरत एक मिनट पर मन्त्रवि श्रमगा क निय चिरनिश की गाण म मा गय। उनका प्राणान हा गया।

मन्नाकवि गात मुझ म पत्न्य थ । उनक मुपमित चहरे का दम्बर यत् विन्वाम
नग्य होना था कि जब व हमारे बाच नहऱ रह ।

मन्नाकवि क जन्म तथा मृत्यु का तिथि जीर त्तिन भा सायक थ । विद्या एव कता
की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती की जन्मतिथि वमत पचमा था उमा त्तिन मन्नाकवि
का जन्म हुआ था और आज उनकी मृत्यु का त्तिन भी रवि (मूय) का त्तिन रविवार
हऱ था ।

थागा हा त्तर म उनकी मृत्यु का समाचार मारे मुहलन नगर और रत्तिया जाति
द्वारा जय नगरा म भा प्रसारित गने गगा ।

क्षण भर म मारा मुहलना मन्नाकवि क निवाम ग्यान पर उमत् पडा । मारी भीत्
गोलाकुन जीर नि गत्त था । बातावरण अत्यधिर निम्नत्त और निर्जीव था । निराता
जा जय क्या मचमुच नग्य रहे ? हरेक का हरेक म मौन क्ष र प्रन्न था ।

नगर म सवन गात छा गया । बाढा ही दर म नय पुरान अनक सात्त्थियनारा
कनाकारा प्रतिष्ठित नागरिका और निराता क भक्ता गुभचितका का भात् जमा
हान गी ।

काश सत्य झूठा होता ।

१५ अक्टूबर १९६१ की दोपहर की बात है ।

मै जयन कमर म पत्ना ग्था यत् साच रत्ता था कि आज सायमान महाकवि का
त्सलन चनगा । अकत नग्य त्ता गत्त मित्रा क माथ । पिछ्त त्तिन अखबार म निराता
जा का भयंर अस्वम्यता का समाचार पत्ता था । एमा स्थिति म भा उनक ग्गन स
वचित ग्ग मर तिय गम रा बात था ।

तरागज त्ता मन्नाकवि का निवाम ग्यान था मर घर म काँ तान मान का
दूरत पर कै जीर मग्य तान यत् रि मान का यामारा क कारण गत्त पत्ताग का पत्त
यात्रा भा तुवभ गता कै । जनग्व एक मय का व्यक्तम्या कर्न का चिन्ता म था ताहि
मान तान का रिकता गत्ता नियत्त गत्ता ।

अपना ता जेव खाला था । माच रहा था मा म भागू । निराता जा का देखन जान की पाव कूया ता व न रेंगा ।

वम ममम्या मुनयना रगा ।

वारह वज थ माचा चार वज तन चन रूगा । म्म जार म निश्चिन हारर कुठ निखन क विचार म बग ही था नि मडक म गुजरते हुय दाग पर म ताउ म्पाकर की चाख मुनाद ती ।

य ताग ता जार वान खाय रग्न ह । म खान कर बुट्टुटाया, किमी नना मन्गय क भाषण का सूचना ना ना रही रागा या कि किमी किन्म रा विनापन ती रहा रागा ।

तागा घर म दूर था । माच का जावाज भाग था जनाम्ब में म्पाक मुन नहा मका था ।

कार्क एक मिनट हुआ हागा कि माना जा नीकर वमर म आइ आर छूत हा वाना गनर मुना—ताउ म्पाकर क्या वान रहा था ?

क्या ? मैं जाश्चय जीर हैराना म पूछा ।

निराता जा का मृत्यु ।

आय । मज चाक कर राधि हा म उका वान वाटा ठाक म मुना भा है आपन ? जीर अग मचमुच एसा बात ह ना गजय रा गया ।

जभी अभा ता तागा अधर रा म गया । मा न अपन रयन की पुष्टि का । म यौवनया मा मन्क पर ता पडा । मा न जा वन भा उम पर मुख विश्वास न राना था ।

तागा राका दूर निरन चुका था मगर म उमक पाउ भागा जाता । निराता जा गचमुच नना रग म्म विश्वास करन का जा नना चान्ता था ।

जवानक रा मर जन्वन रा गय । मैं गान्ग्या मा मन्ग रग गया । ताउ म्पाकर मे उर कर भारी भरभम जावाज मम भाग क धान का भाति पर वाना म प्रवण रेर हूय तर प्रवण करन रगा—रुम का विषय कि जाज प्रात काव नगभग माच ती बी जिन्ने क मगन वरि निराता जा का स्वगवाम हा गया अनर निवान म्थान

दारागज बड़ा काठी के समीप से उनका जर्घी ३ बजे मायशान उन्गी आप सब अधिक म अधिक सग्या म महाकवि का गव यात्रा म सम्मिलित हा ।

निराला जा चत गय । म फुम्फुमाया उह अनिम बार जावित जवम्था म दख भा न सका । एक गम माम मर हाठा स फटी—कुछ पुराना बार्ने यात्र आइ जीर कुर्ने पर न बत्र आमू डनक पत्र ।

आश्वासन जीर अचेत सा कमरे की आर लौगता हुआ मैं निरीह बावक सा बुन्बुन् उठा काग मत्य झग हाता ।

निराला शव यात्रा—दाह संस्कार

बना भात्र बन्त है यत्र हकी । गौत्र जी न बना ।

अनिम स्थान ता कर नू । म पिता रक यात्रा ।

मरुत गत्रा म थात्रा दूर तक गया । यात्रा जात्र यात्रा का कताग सत्रा था मुत्ले के उन गरीया का जा मत्राकवि ती मत्यु का समाचार मुतरर दौत्र आय थे ।

मैं कत्रामत्रि के मामन पट्टक गया—मामन चत्रुत्र पर भात्र न भाड थी । जात्र पहचान चत्रा पर अत्रि गद—कुछ यत्र यत्र सात्रित्यकार । सबक सब गत्रर गात्र म डूब हुय । मैं धारे म एक कान स मिमित कर दरवात्र तक पहुचा बना मुत्रिचन स मिर अत्रर कर त्रवा मत्राकवि जर्घी पर त्रिगाय जा चक थ ।

मरा कापना दट्टि क्षण भर का त्रनका मुत्वाकृति पर पत्रा—भापण सिहरन हुद जात्र म नाच उनर जाया ।

बना न रत्रा है ? बात्रर जाया ना त्रान्ता न पृठा यत्रि मात्र म न जाय गय ना हम कत्रा त्रना भा नमाव न यागा ।

मात्रर नत्रा गत्र यात्रा पत्रर न यागा । मैं यात्रा जभा वात्रकृष्ण रात्र जा यत्र परामग कर त्र र कि जर्घी पत्रर न चत्रा याय या मात्रर पर ।

मदन एक म्दर म कत्र कि पत्रर न यात्रा यागा । यात्र अनिम बार त्रना स्थान ता कर सकेंग ।

गला क नाना आर उदास दुखी दगका की भीड़ लगा था । उनमें अधिकांशतः
ऐसे लोग ही थे जो साहित्यकार निराना नहीं करत महात्मा निराना का मृत्यु का
दुःख समाचार सुनकर लौट जाय थे । उनके दीन गीन चेहरा पर आकुण्ठता क लक्षण
थ और उनकी आंखों में आसू छनछनता रहे थे ।

मंडक पर अपन मित्रा सहित आकर एक ओर चुपचाप खड़ा हो गया । छोटी छोटी
टक्कड़ियां में खड़े हुए लोग गव-यात्रा के सम्बन्ध में विचार विमंग कर रहे थे ।

बहुत मारे नये पुराने साहित्यकारों को मैं बहा पहल पत्त नया । महानेवी जी
भगवतीचरण वर्मा इनाचन्द्र जोशी और अमतराय आदि जपन जाप में आश्वस्त
पीडित और विवक्षित विमूढ थे ।

साहित्यिका के अनावा बहा पर नगर के प्रतिष्ठित नागरिका प्रकाशका कनाकारा
हितिया और दारागज क निवासिया का मना उमड़ रहा था ।

यह भी सुना कि कुछ समय पूर्व कद्राय गह मन्ना लान बहादुर गास्त्री महाकवि
का अपनी श्रद्धाजति समर्पित करने आय था ।

एक दिन पूर्व जीवित राग प्रस्त महाकवि का देखन के लिये जिनके पास अवकाश
न था आज इन समय उन्हें श्रद्धाजतिया इन के जिविकार में बहा यस्त सहृदय जन
वचन न रहे ।

मैं ऐसे ही कितने लोगों का नाम गिना सकता हूँ जो प्रयाग में रहते हुए भी
महाकवि के दार पर नहा जाय लकिन आज वे अधिनाधिक मर्यादा में बहा दिखाई
पण रहे थे ।

निराई भी क्या न पडत ? निराना की गव-यात्रा में शामिल आकर उन्हें अपनी
सन्तानुभूति और सहृदयता का साहित्यिक ज्ञान बना था ।

अर्थात् बान्तर निराना रही है ।

बानाकरण में सर्वप्रथम मुगधिन और रघुपति राधव राजा राम के स्वर गूजने उग ।
मर्यादा का भाव अर्थात् आग पीछे चल पडा ।

था इनाचन्द्र जाणा अमतराय श्री बानुचरण राव और अन्य साहित्यिक बंधुआ
ने आग बढकर अर्थात् मर्यादा लगाया । अर्थात् धारे धारे भारा भाड क वाच समान
की ओर चल पडा ।

उनका मुख मण्डन खुला हुआ था। चीन्हा ताल पर तम्बा टीला सुगाभित था। गने म अनक पुष्प मात्रायें थी। मिर म पर तब उह कूना म ताल निया गया था।

रघुपति राघव राजा राम पतिव पावन साता राम । सक्ता बठ म्वर एक रूप लेकर वायुमण्डन म फन रह थ ।

सडक के नाना जाग म्यिन मवाना क चक्कर लगानें दुगान और छत्र भर पल थे ।

मित्रिया वादिवायें बढाय और बन्हे सभा महाकवि क अतिम गान का उतावन हा रह थे ।

अर्थी आग बन्ती रहा । जाकागवाणी क कायकर्ता रिनाड करत र । पुष्प और पुष्प मात्रायें बरसती र ।

गाव मन्तप्त भाड धीरे धार मगान का आर बन् रही थी । नोग कधा दन क निया दौन रह थ मगर ननना भाड म हरेक का यन् सौभाग्य मिन पाना दुप्कर हा र ।

मगान घाट पर नौकाय तयार था । कुड साहित्यकार उन पर मवार हो गय और दा-मस्कार क निया चिना मजाइ जान गया ।

निराना जा क मुपुत्र ना रामकृष्ण दा-मस्कार क निया गव क समाप गाकाकुन निसार्क पड ।

जावयक धार्मिक क्रियायें समाप्त हइ और मगाकवि ना चिना पर निटा निया गया ।

हम जुन गय म यन् हन्य विचारक दग्य दखन रह ।

चिना म तपयें उरन गगा जोर मगाप्राण का गरार राख नान गगा ।

क्या निराना जा मचमुच न । रे ? नरक का फना-फना नलि मर दूसर म प्रान कर र ।



गांधी जी से टक्कर

इन्दौर में शिवा माहित्य सम्मेलन था। सम्मेलन के सभापति महात्मा गांधी थे। उन्होंने अपने भाषण में कहा— मैं यह साचा करता हूँ कि हमारी राष्ट्र भाषा में स्वतन्त्रता जन्म कबि ने क्या नहीं जन्म दिया।

यह सुनते ही निराला जी विगड़ पड़ और गांधी जी से भिन्नता को तयार हो गए। वे महात्माव भाई के पास पहुँच कर बोले— मैं राजनीति में गांधी से नहीं बल्कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति से भिन्नता चाहता हूँ।

महात्मा भाई ने उनके रोष का कारण पूछा तो वे जानते— मैं गांधी जी से पूछूंगा कि आपने निराला साहित्य पढ़ा है जयवा नहीं? वे कहेंगे नहीं तो कहूंगा कि आप जभागे हैं। अगर पढ़ा भा तो आप समझ लेंगे।

पहले निराला साहित्य का समझने का वाग्विषय कीजिये फिर हिन्दी पर कुछ कथित और अगर उन्होंने कहा कि समझा है तो मेरा कहना होगा कि भद्र गांधी से मतभेद है।

निराला जी का ऐसा बातें सुनकर महात्मा भाई बहुत चकराये। उन्होंने निराला जी का गांधी जी से मित्रता किन्तु समय कम जान के कारण उनसे बातें नहीं हो सकी।

नेहरू और निराला

यदि हम पश्चिम जवाहरलाल नेहरू का भारत का एकमात्र राजनैतिक वक्ता और नेता कहें तो मान्यता निराला का साहित्य का मान्यतम तपस्वी और भारत का श्रेष्ठतम कवि कहना अतिशुक्ति नहीं होगी।

दोना अपने अपने स्थान पर महान शक्तियाँ हैं और दोनों का अपने अपने क्षेत्र में वैजाड यागदान है।

बड़े बड़े दोना महान शक्तियाँ आपस में साक्षात्कार के लिये आनुर हुआ। एक दूसरे से भिन्नता के लिये उतम और प्रयत्नगत हुआ परन्तु कथित तब विलक न

कभी ऐसा गम अवसर निश्चिततापूर्वक जान नहीं लिया। भय रम बात का था कि कहीं य दोना मगन गक्तिया एक दूसरे में टकरा न जाय और फिर उनमें से किसी एक का पराजित न जाना पए। अतएव नए और निराशा मितन न अवसर मएव टाज लिय गय।

एक जोर महाकवि के स्वाभिमान न कभी उह भारत के प्रधान मंत्री के प्रति उठार नहा हाने लिया ता दूसरा जोर भारत क प्रधान मंत्री ने मगनवि क लिय अपने का तरन जोर द्रवीभूत नही बनाया।

किन्तु एक बार मगनवि का प्रेम मग ह्रा पडा और वे नहरू मितन का लोभ मवरण न कर गके। हाथ में मिठाई का दाना जोर चाय का प्याना लिय हय व उम विगान भवन के प्रमुख नार पर पहुच जिममें प्रधान मंत्री ने आतिथ्य ग्रण किया था।

सेन का विषय है कि मगनवि की इच्छा अपूरा रए गई। द्वार रभका ने उह नए म मितन नए लिया जिसक फलस्वरूप मिठाई और चाय वी फेंकर वे खिन्न मन में वापस लौट गय।

एक घटना की सूचना जए प्रधान मंत्री का मिना ता उठाने निम्न गगन में अपन विचार प्रकट लिय पिछला बार लागगज में मीन बना काटा में मुना कि निराशा जी मिठाई और चाय लेकर मुच में मितन आये किन्तु मिपाहिया में न उनही ठन गई और चाय का प्याना तथा मिठाई का गाना वहा फर कर ध लौट गय।

वे राष्ट्रपति, तो मैं साहित्यपति हूँ

एक बार का बात है कि मगनवि म भूतपूर्व राष्ट्रपति न राजन प्रसाद पधारे। वे निराशा जा में मिान का उमुक थे अत उठान अपन पा म नारा निराशा जा का बुनवाया।

पा म न म काय में मगनवा न का मगयना न। वे महानवा जा क माय मगनवि क निदान म्यान पए जाय।

मनावा जा न निराता जा वा राष्ट्रपति व आगमन का समाचार लिया ता व वाच—कहाँ है ?

गवनमण्ट हाउस म ठहर है आर आपस भट करना चाहते ह । दवा न बनाया ।

निराता जी कुछ माचन गग ता व पुन वाता मात्र आई ईई है आप साथ हा चले ता जच्छा हागा ।

मैं वग क्या करन जाऊ । निराता जा एकाएक उत्तमिन हानर पत्न गग वे राष्ट्रपति ह ता मैं मातिल्यपति हू । अगर व १० गजेद्र प्रमान ह ता व यग भी आ मवन ह और आग व राष्ट्रपति की हैमियत ने मुम वग युता रह है ता मुम राष्ट्रपति म कुछ नग लना नना है ।

उनरा उत्तर मुनकर मय मोन रह गय ।

मुहतोड उत्तर

एक बार महाकवि व स्वाम्थ्य व सम्बन्ध म यह सूचना प्रसारित की गई कि उनका नया चिन्ताजनक है व एक प्रकार म विविध स न्य उत है अनएव सरकार उनक उपचार क निय उचित व्यवस्था करन का कृपा करे ।

इस सूचना पर उत्तर प्रदेश क तत्कालीन मुख्यमन्त्रा टाक्टर सम्पूर्णानन्द न कहा कि निराता जा का पागपत्तान म भजनर उनरा उपचार करना चाहिये ।

मनाकवि वा मुख्यमन्त्रा क उक्त विचार न गहरी चान पहुचाइ । व इस महन न कर सक आर उगत नमका मुन्नाड उत्तर लिया आगट क ताजमहन का अपक्षा मैं गगा जा म विश्राम करना अधिन जच्छा समचना ह । सरकार मर स्वास्थ्य का चिन्ता न कर अपन स्वास्थ्य का गुधार । (गाण्णाहिक भागन २५ जनवरा १९/५)

मेरठ कवि सम्मेलन

एक बार तुवगा जयन्ता क उपन र म आयोजित कवि सम्मेलन म मरठ वाला न निराता जा का आमत्रिन लिया । निमन्त्रणपत्र क उत्तर म निराता जा न निम्ना,

मुच प्रचुर धन प्रदान किया जाय जब मं सभास्थान म जाऊ ता मव खन् हाकर स्वागत कर और जब म कविता पन् ता सभापति भा खन् रह । मन्न गने ता माय भा हा सक्ता थी किन्तु सभापति क खड रहन का गन कठिन ना क्याकि मरन् क एक प्रतिष्ठित तथा सम्भ्रान्त नागरिक कवि सम्मदन क सभापति मतानात किय जा चुक थ । उमरा यह समाधान किया गया कि स्वय निराना जा का कवि सम्मदन का सभापति बना दिया जाय ।

कवि सम्मदन जारम्भ हुआ निराना जा सभापति बनाय गय और व अध्यक्ष पद न भाषण देने लग । ध्यानजा का आर म जावाज जायी कविता पण्डिय ।

निराना जा बराबर वादत रह ।

फिर बद् आवाज पण माय आया कविता मुनाय्य । निराना जा का र्ग हल्ल पर श्राध आ गया । व मच पर म उठ कर चन पन् । वे स्तन श्राध म थ कि उह जूता पन्निन का भा यात् न रही । जूता हाथ म ना नकर चन पड । कानज क दरवाज पर पहुच ता गह कुद नागा न रावा । व पमाने से तर-बतर थ । एक छाया देका गह पया मनान लगा । किमी न गथ म जत लकर पाव म पहनाय । मन्नाकवि कुद नन्न हुय जाण पूछा क्या चात्त ग ? र्गम नाग आपकी कविता मुनता चात्त है मन् न एक स्वर म रहा । निराना जा एनाएक प्रमन्न हा उठ और बात अन्ना कविता ता मुनाऊगा तकिन् उम मच पर नन् । तुरत हा दूमरा मच तयार किया गया और निराना जा उम पर विराजमान हाकर मन्वर पाठ करन लग ।

एम विचित्र थ हमार महाकवि ।

निराला का वस्त्रोदान

एक मान वसन्त पंचमा क दिन निराना जा गया स्नान का गय । स्नान करन क पन्चात व र्सा । तन् पर जाय एक मन्त पगर वात भिगारा न र्गम यम्त्र का निभा माया जम र्गम पन्त म पात हा कि तानवार मन्नाकवि र्गमक मामन है ।

सम्पत्तिका व वीच निराता]

निराता न अपना नया कुता उमक हवाल कर दिया और धाना पहनन नगे ।
 स्तन म एक बुद्धिया न आग बरकर धाता माग ना । महाकवि न अपनी परवाह न
 करक मह्य धाता भी दान कर दी । बग पर उपस्थित लाग आचय और श्रद्धा भर
 नेत्रा म महाकवि का निहार उठे ।

अत्र उनक पाम कवन कम्बन बचा था और उजान उस भा उठाकर एक तीसरे
 भित्तारा का दान करन के लिय आग बढ़ाया कि एक व्यक्ति न उनका हाथ पकड कर
 राक लिया और नामा भित्तारिया का बहा म भगाया । उजान निराता जा का अपने
 माथ रखकर पञ्चाया । जनमसूत्र श्रद्धा जार गदगद कण्ठ म मन्त्रकवि का ज्ञानवीरता
 का मराहता रन ।

✓ मेरी मा भीख नहीं मागेगी ।

एक दिन निराता जा क पाम एक भी पमा नहा था किंतु उह पम की बडा
 जबरत थी । दापहर क भाजन क बाद नग मिर नग पर बदन पर कवन एक तुगा
 नान हय क चीन का जार चन पडे ।

जनन प्रजागक (वितान मन्त्र) क यन्त पहुच कर उहान पारिश्रमिक का माग
 गी । प्रजागक मन्त्रय न उह तीन मी रुपय दिय । बच हुय तमन्त्रम क नात्र थ—
 भजान का वाम पक्ष का था जन तुगा का फेंट म तपट कर पन्न हा अपन निवास
 स्थान का आर चन पड ।

जब क जनापी बाग क निवट पहुच ता एक बुद्धिया नटिया टरत हुय नामन
 पड गई ।

निराता जा का स्वत न कह पडी, बग एक पमा द द बग भूय नगा ह ।
 निराता ना मन्त्र मन्त्र बुद्ध क्षणा तक उस दनत रह । उस बुद्धिया का बटा
 कहना उह चाट रन गया । उजान उस बुद्धिया न पूरा तुम्ह एक रुपया न दू ता
 कितन दिन भाग नगा मागागा ?

नानात दिन नगा मागूगा बग । बुद्धिया न उत्तर लिया ।
 तुम्हारा एक महान का मच कितना हागा ? निराता जा न फिर पूछा ।

बाई पत्नी वाच रपया । बुढिया न बनाया ।

जीर मान भर का । निराता जा न फिर पूछा ।

बुढिया न समता मजान कर न ह जन यज्ञताकर बाता— पहन एक दिन का ता ठाक हा फिर मान भर की फिर बह ।

अच्छा य बनाया कि तुम्ह कितन रुपय मिन जाय ता तुम भाव मागता छाए दाया ? निराता जा वाच ।

दा मी रुपय मिन जाय ता भाव मागता छाएकर काइ राजगार कर नूया । वन वाता भाव मागता अच्छा नया गगता आर काइ भीय नता भा नया ।

उमका बात मुनकर निराता जी न सार रुपय निदान कर उम दते हुय वहा— य ता तान मी रुपय ह । मा का काम करक पट चनाआ । अर भाव मन मागता । निराता का मा जीर भाव मागता ? नया अर मरा मा भीय नया मागेगा । कन्कर व भाग बट गय ।

हाथ म नाटा का गल्ला दबाय बुढिया आचयचक्ति मा उए जात लगता रहा ।

निराता जा खाता हाथ घर चोट ता किमा न पूरा कया गय थ पन्नि जा ।

विदाय मन्त र रुपया नन गया सा । निराता जा वाच न्यात तान मी रुपय न्य थ मगर रास्त म मरा एक मा मिन गई भाव माग रया था उसा का न निया उम जरगत था ।

इक्केवान का सोभाग्य

एक बार निराता जा प्रवाणक क यया न पारिथमिक देकर एक त्वर पर बट न्य नारागत जाय । त्वरा जव म फन्कर पगा नया था लगतिय एक तम रुपय का नाट इक्केवान का त्वर चदन बन ।

त्वरवान न समता कि फन्कर पमा नया है नाट न्यान क त्रिय ता है । वन नाट नुदान नया मगर जव वापस चोटा ता निराता जा नयागत थ ।

वन आग बटा ता निराता जा जान न्य त्रिया पट । तान जाग बन्कर जावात्र नया मन्गत्र पन ता नन जीय ।

जब वर समाप्त पहुँचा तो निराना जा वाले क्या बात है क्या कम है ? अब मैं नहीं दूंगा आज मुझे पस की जरूरत है ।

नया महाराज अपने रूप में नाजिय । आश्चर्यचकित वह पुन बोला ।

ने जाया ल जाया । निराना जा न क्या ।

नया महाराज सब इस ने नू—मरी आश्चर्यचकित जायगी । वह जाना ।

नया जाकबत नया विगडगा भाई ल जाया । कोई चाराता कर नया रहे हा ।

वर आया म श्रद्धा और आश्चर्य समझ म नवता पुष्प का आश्चर्यना रहा । अपने भीमांग पर भगवान का धरणा नर नमने मन्ववि व चरण मंग मिय ।

निराला, पागल अथवा मानव सेवी ।

मई की एक चित्रचिन्ता हुई दापारी थी । दुनियापारी व रिश्ता का बनाय रखने व निय में भा जय जागा व साध एक गव यात्रा म सम्मिलित था । भीषण गर्मी म नू व थपत सहता हुआ आमन का तपता चिपचिपाता सच पर म गुजरता हुआ मैं दारागज का आश्चर्यना था ।

रामदास मंगल व पहल पुन व समाप्त पहुँचकर मैं अपने कुछ मायिया मन्त्रि ख कर आश्चर्यजनक तमागा मंगन गया ।

हमने देखा कि दा-तीन टुकड़ रिद्धि भिन्नमग पुन व नाच वट टुप ह और एक नम्बान-नया विधानमय साधू एक बागी म पानी भर टुप वग का तमीन पर छिन्दाय करके उस गालत बनाने का प्रयत्न कर रहा है । पाना मन्त्रि व वाट वट उगा व बाच धरकर वट प्रम म वाने करन गया ।

हम उस मण आश्चर्य चकित रहे गये जब हम पान हुआ कि वट साधू और काद न । मन्ववि निराना ध ।

आज ना मन्त्रि म एक तर उगा है निराना मानव सेवा ध अथवा पागल ।

निराला बजट

निराता जी रुपय हाथ में जाते हैं उस खर्च कर सकते थे जिसमें प्रायः उह आर्थिक विषमता का सामना करना पड़ता था ।

उनका यथ ममानन और यथस्थित करन के विचार में श्रीमता महात्मा बमा न उनका घरेलू बजट बनान की जिम्मेदारी अपन ऊपर ले ला । उस बजट में नाए म नरर जान पडनन आठि मभी तरह क खर्च का सूचा तयार का गई ।

परन्तु यह बजट एक मप्ताह भी स्थिर न रह सका ।

रुपया जाया और बजट की चिन्ता छुटाकर निराता जान पचाम रुपय बिना विद्यार्थी का महायत्ना स्वरूप में स्थित और गय रुपय बिना बामार माण्डित्यकार की मन्त्र के नियम भङ्ग स्थित । उस प्रकार मारी एकत्रित पजा एक हा सप्ताह में समाप्त हा गई ।

सच्ची श्रद्धाजलि

निराता जा की महायत्ना के जनक सम्मरणा क मुन जाते हैं और य सम्मरणा भी अत्यन्त हृदयस्पर्शी है ।

प्रयाग में पण्डित जवाहरनाथ नरू के वन्दना में जाए एक० पण्डित का जब निघन म्जा उस स्थित रात का जाए बजे निराता जा का पता चला कि था जाए एक पण्डित का गव दिवसा समान घाट पहुचाया गया है । वह तुरन्त उस जाए चले पड ।

जागा न उह य क कर रातन का चण का कि गव का म्मरणा का चरा जागा आर गव-यात्रा तोर चक हाग ।

परन्तु व कव मानन वात थ वात मत्र जागा म कया करना है निना रूप आयें ।

मुनमान रात में निराता जा म्ब जाए यम पण्डित का अधजना चिन्ता पर पन्ना न न न न कि गव यात्रा कयव तोर चक थ ।

निराता न उस स्थित पचाम रक्ता और एक कविता भा स्थित ।

मन्मरणा क बाच निराला]

वह तो कवि हो गया

एक बार निराला और पत्न जा जादि अपने किमी मित्र के यग चाय पर निमंत्रित किय गये ।

उनम मान्तिय चचा चा ग्हा थी कि न्तन म एक नोकर चाय तादता आन्ति नकर बग आया ।

पत जा न बडी महानुभूति के साथ उनम पूछा तुम्हारा क्या नाम है भाई ?

मकू मरवार । उनम उत्तर दिया ।

क्या तुम अचेन हा मकू ? उहान फिर पूछा ।

नहा मरवार एक मा एक ब्रिटिया और दो भाइ भा हैं । उनमे बताया ।

कमान वाले तुम अकेल ही हो ? पत जी न नया प्रन किया ।

बडा भाई खती म हाय बगता है छाग भाइ न हान क बराबर है ।

लागा न समथा नि उसका छाग भाइ आबारा जोर गारता निराल गया है तभी मकू उनग लिय एसा कह ग्हा है । पत जा न जिनामा प्रगन ना क्या उनक माय क्या बात है ?

मकू न महज भाव म उत्तर लिया अर मरवार वह ता कवि ना गया ।

यह सुनते हा सब क सब ठहाका मार कर हम पड और निराला जी उचक कर उसका पाठ ठाकत हुय बाग गाबाग बना ।

निराला ने दुल्हन को देखा या दुल्हन ने निराला को ?

महाकवि जब बभा रिमा गया या गम्त म गुजरल तगत मकडा तागा वा आखें उन पर जम जाता । ताग आया म थडा और आन्चय ममटे तब तत उह दखने ग्हत जब तब कि वे आखा म जावन न हा जात ।

एक निन रात म तगभग मात बज निराला जा तारागज का एक मन्क पर म गुजर रहे थ कि मभीप ना रिबगा पर अपना नव विवाधिन पानी क साथ बर हुय मुबक न पत्ना का मन्कवि का न्गन कराना चाता ।

इसके पक्षे कि वह निराता जा के लान कर पाता व जाग निरत चक थ जनगव वह बन्ना गहना म जनकृत मुत्तर रिक्ता क पाछे लान क निय थका । रिक्ता बाल ने रिक्ता जाग बटा दिया म । म्म बचारा स चनरा का छार रिक्ता क पन्थि म फम गया जीर व नमान पर गिर पना ।

नाग यह तमागा दख रह थ मगर तत्र तर मन्नाकवि कुर्ती म वनी नौट पन् और भा चार कर नव विवाहित नडका का उठान हुय बाव— बटा चाट ता नग आइ ?

व नम म भीग गई । निराता जा ने बहू का ता देखा पन्तु बहू का उत्सुक प्थामा नजरें निराता का लय सवा अथवा नग कया नहा जा सकता ।

निराली परीक्षा

निराता जा या जावन प्राय न जायिक अभावा म शमित र्ना है । बहूना न एमा समय जाया है जवनि उाक पास धन धन ना तगी र्ना है । यना कारण र्ना है कि वे र्नि और याचना क प्रति ब न हा बिनअ जीर लाना रह है ।

एक बार म राज प्रमा अवस्था पन्नि ना म मिता जाय । उन निना थ कुछ शमार थ । अवस्था ना न नका लानवारता ना सब नानियाँ सुन र्गया था । जनगव न मन्नाकवि का पराना नन का म्पा । व पन्नि जा म कुन्नु र्पय भाग बठ । मन्नाकवि न तुरत अपना चारपाई क गिराने साथ लान कर जिनन पम थ उना निय और उम अवस्था जा ना जा र बनेन हेय बाव नम समय ता कुन मा लान र्पय ह यनि लन म काम चन जाय ता न नात्रिय ।

अवस्था ना जममत्रम म न गव । मन म साचन तग—कन ग मन्नाकवि ना परा ना नन का माचा । फिर पन्नि ना क निरत विमव कर जान नग पन्नि जा मुय पमा का उरुन नग न ।

निर माग बया निराता जा न कया लगता है य न बहूत कम है । नुन्ना नग पमा का उरुन है । नग जीर माना ह । य ककर व घर म रिमा का जावड नन तग ।

सम्मरणा के बीच निराता]

जब ता अवस्था जा बहन न घटनाय और अपना जेप न मनीसग निवान कर
निराता जा का खिलनात हुय मान खिय पत्नि जा मरे पाम रपत्र ह । नम ख
कर निराता जा दतना हा वान समझ गया ।

निराला जी की दवा

एक बार महाकवि क पराम अपरम न गया था । व खीझ-खाप कर उम
गुज्राने और बहन जब तिसी दिन नम राग ठूगा । बिना दाग य खीमारा दूर न
गयी ।

पत्नि शिवगायान मिश्र न यह रणा रया ता जान पत्नि जी रवा नाऊ ।
इसका क्या रवा है यह ता रागन म ही ठीक गगा । निराता जी न उत्तर दिया ।

अगर काइ रवा न ता न आऊ ? मिश्र न फिर क्ता ।
गाम का दवा जा गइ । पान का रवा और मल्टम । मन्म नजर निराता जा
न पाव म गगाया और पीन का रवा क निय क्ता एक आम की खरान है । य
पौवा मान दिन नगा । गागी का मु गान कर व जाधी गोपा पा गय ।

ठाक न था उन भूखरानार गरार क लिय एक आम रवा का क्या महव था ।
दूमेरे दिन उ हान रोप दवा भा पा डाला ।

पहले कमला फिर निराला श्रद्धा के पात्र है ।

महाकवि निराता म पूव दारागज प्रयाग क निवामा न कमनाकर जा एव
नके समस्त परिवारजन श्रद्धा तथा बन्दना क पात्र है जिह एक नम्बी अवधि
तब महाकवि क सम्पत्त म रत्न जर उनका गवा मुनूपा करन का सोभाय प्राप्त
हजा है ।

निन्हा मात्तिय मगार चिरवान तर उनका क्रणा बना रहगा ।
निराला जा क अन्तिम निना म उन्नत जिय निन्हा एक भक्तिभावना म हिन्हा

क वरुण पुत्र का अथवा परिश्रम म मवायों का है वह कभी भगवान् न जा सकेंगा और उमका तुलना निराना जा क किसा भा प्रमा त्रिपदा और भक्त म न का जा सकगा ।

कमनागकर जा न मन्त्रकवि का निस्वाय मवायों का है । उन् उनम क्या स्वाध और लाभ हा हा सस्ता था ?

वे धाय है उनक परिवार जन पूज्य ह कि उन्गन निराना जा जम निरान एव अन्पटे तथा ताम् मन्त्रपुरुष की मवायों करत न्य ग्यारह-बारह वर्षों की उम्दा अवधि वर ही मयम और निष्ठा क साथ यतीन कर डाता । जिम भी निराना क सम्पक म कुछ समय यतान करन का गभ अवसर मिता गगा वर भनीभानि जानता हागा कि य क्तिन जनाध्य और अमत्यागा व । एम मन्त्रपुरुष क सम्पक म दन् और सयमित रह पाना क्तिना दुष्कर गता है ।

निम्नतर अस्वन्व चिन्तित और यथित रत्न क वारण निराना जा वा स्वभाव वदुत चिन्चिडा और त्राधा हा गया था । वन्वा राप म उनक मुख म गानिया भा निवन जाता रा क्तिनु रा कमनागकर एव उनक परिवार जना न मन्त्रकवि का सवा मुशपा म त्रि न्ना तान दा और मदव त्रडा क साथ मवायों करते रह ।

एन मन्गन यत्तिव और सहृदयता क पात्र था कमनागकर जी और उनका निराला मवा परिवार वन्नाय है । मन्त्रकवि क साथ उमा प्रनार उनक नाम का गग मिदना चाहिय जिम प्रनार भगवान रामचन् क भक्त सवक हनुमान जी का मिता है ।

जब हम निराला जी से मिले

मृत्यु क पूव मन कवन ता बार मन्त्रकवि क गन त्रिय थ । एक बार ता उग समय जबकि मरा उम्र कवन वारन् वष का था और मैं जाग्दा र ता का त्रिद्यार्थी था ।

कानत्र म कवि-सम्मनन जायाचित किया गया था और उमका अध् तना करन क त्रिय मन्त्रकवि का वनाया गग था ।

कविता निम्नत का नन मज्ञ त्मा उम्र म मवार था । छाना माग वचनाना कवितायें निन्दा करना था ।

नागा का अपना कविता सुनाने क त्रिय इतना उत्सुक रहता था कि कवि सम्मेलन क भयाजक जी म कर्कर अपना भी नाम लिखा लिया था ।

निराला जी बहुत बड़ कवि है कम इतना हा उस समय जानता था । मुझे उह न्यून की बड़ी उमुकता थी ।

कालज का हान टमाटम भरा था । अय निमन्त्रित कविगण आ चक य कवन निराला जा का प्रताप्ता था ।

लगभग साठ सात ब्रज महाकवि पधार ।

निराला जा जा गय निराला जा जा गय । नागा क हर्षोल्लास जीर तानिया की गडगडाट म हान पूज उठा ।

म मच पर पीछे का आर बठा हुआ म उचक कर ला । य ही है निराला जा ? मरे विस्मय विमुग्ध नत्र उस विगातनाय महामानव का कई क्षणा तक धूर धूर कर लखते रह ।

लागा न कपी श्रद्धा म जाग कर्कर उनका स्वागत किया जीर मच पर बिठाना चाहा ता क मच का मीडिया पर हा बठ गय । बहुत कण गया मगर कण वह ठ रह । फिर उन्नत बाड़ी माचिम तान का कहा ।

सारा हान उहा का जीर दख रहा था ।

बाग माचिम आ गई । उहान साग पर हा ठकर बाडा पाना गुरु क लिया । फिर उनकी आगा म कवि-सम्मेलन आरम्भ हुआ ।

म छाग अवश्य था किन्तु निराला जीर मात्मी क्तत था जनण्य मरा नाम पुवारा गया ता म भी बघटन मच पर जाकर अपना कविता पत्न लगा ।

क बचभानी कविता आज तन याद म मुने —

मुझ म महारा मिता लिखा भग ।
मिना मुक्तिन जाग नवरी रमाना
मिावता प्रनय म व्यथा ना काना
षषडा म लडता रग लिखा भग ।

मन्त्रवि की त्रि मुच पर पत्नी व एकाएक मत्र पर सरक आय । मत्र पात्र यथथाई मुच आगावाँ निया । उस धण मुच कितना जमाम प्रमत्ता हुइ उमकी अनुभूति आज भी माहिय मृजन न उतामान नान पर मुझ गवत प्ररणा दता है ।

जत म निराता जा न भी अपना कर् सुत्तर कवितायें मुनायी । उनका उच्चरानि का रचनाजा म छिप हुय गूट रस्य का ता म नरा समय मका था किन्तु रनका अनुमान अवश्य कर लिया था कि वास्तव म व मन्त्रवि ह ।

रत रम म जविक का समय हा चरा था । तिम्वर या जनवरा का मनाया था । भाषण मर्ती पत्र रना थी । मगर मन्त्रवि का रम गान का नाई परवा न थी । उगतन कवन नगा पत्र रखवा था और उनक गरार पर कर् वमन न था । वम गन तत्र उगतन एक कम्बन नपत्र रखवा था ।

वमन वमन जीर जाग्रत करन पर भा जत्र वार म जान का तपार न हुय जीर न माग यय श्री निया बलि पत्र न अपना विवाम स्थान का जार चन पड ।

मैं आचयचकित जनी दर तक नशा म प्रदा समेट उग मन्त्रमानव की जार लेखना रना ।

मर जिय वना उनक प्रथम रान का जमगर था उमक बाट फिर कई वप पत्रात मुच कुदर दर क निया एमा मीरा मिता था ।

मच ता यत्र है कि प्रयाग म निराता जा क निरत्र रने त्य म स्वय उनक रान म मत्र वचिन रना मगर रगरा एर विगप कारण था का उतामान भावना नगा ।

नत्र कभा निराता जा क बार म चचा चतना मर प्रीट मां यिय मित्र रने वहा न जाना भया त्रि ज्ञायाग । निराता जा पागल न गय है । व त्रिमी रा पत्रानन नग गातिया रने है । उनक मर इर रने किमा म मितन न । रने । आरि आरि वग-मत्र वानें ।

मरा बाल मन्त्रर एमा बान मन्त्रर चकरा रना जाला जार मरा छाया बुदि कना रि वास्तव म नम्र रने नत्र पाग जाल रना रना ।

रना रने क आधार पर मिन यत्र धारणा जना ता रा रि जाम जतना ग निराता जा का मितन नगा रिया रगा । रना ना वना जाल यत्र हा कि क । मैं उनक रान

करन गया जीर व त्रिगड गय थयवा कहन तग कि कविता मुनाआ ता में क्या कयगा ? उनका जाकृति क सामन सा मार भय क मेरी जावाज ही न फूटेगी ।

उम तगइ माच-सकाच जार तक चितक म कइ उप वान गय । में निराता जी क दगन का जाता ता अपन हृदय म हा दवाय मानित्य सवा का जार गनिगान रहा ।

१०६० क जुनार्द महान म जागा क विपरीन अचानक ही मुख मन्त्रकत्रि के ग्यान का सोभाग्य प्राप्त हुआ ।

उन त्तिा मेंन अपना एक उपन्यास निचकर ममान किया था । पारित्रमिक की रकम मिल गई था वनिय निवार् का जार म निश्चित हारर ज्यादा समय गप गप म गुजरता था ।

एक त्ति सायकान मर परम मित्र और वयावद्ध माहित्यहार पंडित पुरुषात्तम राम गौड बाल गकर चला एक दिन निराता जी का नेय जायें ।

मुना है कि आजकर उनका तत्रियन कुछ ठाक नया रता । मार निय राम की वान है कि गानावा म रहकर भा निराता ता जी खबर न रकन ।

क्या आपका परिचय निराता जा म है ? मैंने तुर न ता पृछा वे आपका जानत है ?

मूख अठा तगइ । गौर जा त्तना कहकर मरे अजात्र सवान पर जाश्चय म त्म निर वान त्मम परिचय म क्या मतवव ? परिचय ता तथा म्यान लाग म मिनता चाहिय ?

मैं ता यहा ममपता हू । मैंने उह अपन तव का सारा वात कह सुनाइ ।

उहान मरे मार त्रम और सकाच का खण्डन त्रिया तत्पश्चात दूसर दिन प्रात वान मारा प्राग्राम महाकवि क यत्न जान क निय निश्चित ना गया ।

मबर हम त्रिगण पर चत्तर महानवि क निवाम स्यान त्रारागज का जार पन पड ।

त्रिम समय हम त्राय पट्टच निराता जी अपन कथा म गवत्तम अवंत थ । गम्भार चिन्तन म जान क विग्राम कर रह थ ।

हमन अभिवादन किया और चरण स्पृश करन क निय युक्तता क बन्धन म बाल आजकल क्या निश्चय रत्न हा कामन जा ? तुम्हारा ता मुन बन्ध भायो ।

अधर नया कुछ नया निम्ना पक्ति जा । मर मित्र न मक्षय म इतना कन्कर मरा परिवय निया ।

अच्छा अच्छा । वे गम्भारतापूर्वक मुस्कराय और कहन नग नया पाया वाफा तजा म आग बन्ध रत्न है । फिर मरा पाठ थपथपात हुय बान काई कविता सुनाआ ।

म महम कर रत्न गया । सजन क क्षत्र म मुझ पाच वष नग रह ये परतु मरा शिक्षक स्तनी न खया था कि मैं निराना जम उच्चकाटि क रत्नम्यवाणी मगकवि क सामन बधडक निस्मकाच भाव म अपना कविता सुना मकू ।

उत्तान मरा मकाच भाप निया अत मृदुन भाव म बान—सुनाआ सुनाआ । और फिर स्वय ही गुनगुनाने नग ।

मुझ टाणम हुआ और जम-नम मैंन एक गान सुनाना आरम्भ किया ।

निराना जा बन्ध तमयता म मरा गान गुनत रह और अत म बन्ध दुनार म मरा कथा पकड कर बान तुम ता बन्ध अच्छा निश्चय नग—क्या नाम बताया ?

मित्र न उह्ट फिर म मरा नाम बताया मरा साहित्यिक गतिविधिया क बारे म चचा का ।

निराना जा धान्य चविन न्य और मुझ अपना रचनाय निम्नान क निय प्रात्माहित किया ।

अर मैं उनम खन चचा था अत मन प्रणत का नि मैं जापक माय अपना एक चित्र गिचाना चाना न ।

व हैगन नग चित्र बन्ध मायारण नग म बान टाक है गिचा न मगर काना प्राप्तर क्या है ।

आपन स्वाकृति नग है ता किमा स्ति नय माय उकर जाऊगा । मैं बाना ।

'तुम तात कुद्ध मायारण ? व बन्ध अपनव म बान चाद भा निन मरना है ।

नहीं पड़ित जा हम ताइता करके चने है । गौड जी ने थड़ा स सिर झुकाकर कहा, आप परेशान न हा दगन करन चना आया था ।

निराला जी अपन आप म मुस्कराकर रह गय । कुछ देर तक साहित्यिक चर्चायें चलता रहा फिर हम उनका आगीवाँ लेकर विदा हुय ।

हिंदी के वे पहले महान साहित्यकार थ जिनम मेंने सहृदयता स्नेह और महानता की य अविस्मरणीय सतक लेखी ।

महाकवि निराला और इतना साधारण-सरन जीवन ? में रास्त भर भावता रहा ।

अगली बार फोटोग्राफर साद लेकर उनके साथ तम्बोर खिचाने का बाय प्रम बनाते-बनाते बर्षों बीत गये और ?

सावियत सघ मे निराला

निराला की कई रचनाया का अनुवाद रुमा भापा म हुआ है और उह रुसा जनता न मुक्त कण्ठ स सराहा है ।

सावियत निवासी उनकी रचनाया म पहले म ही परिचित रह ह । उनकी अनूठि कृति म परिमन विमनय जूही की कली और गिवाजी का पन जाँ रचनाय मयहित है । मास्को लनिनघ्राँ और तागक तथा प्रामीण क्षत्रा म भी निराला साहित्य क अनक अनुरागा पाठक हे ।

निराला जा का मत्यु पर उहे श्रद्धाजनि अर्पित करन क लिय भारत स्थित सावियत क सांस्कृतिक विभाग द्वारा सभा जयाजिन हुई थी जिसम प्रसिद्ध सावियत भारत विद्याविद ई० चारागव न गद्ध सिंदा म भाषण क्त हुय निराला साहित्य क रुसी अनुवाद पर प्रकाश नना था और उनके एक गान का पाठ भी किया था ।

सभा म उगान निराला क साक्षात्कार क संस्मरण भी सुनाय ।

रामचरित मानम क रुसी अनुवाक स्वर्गीय अकादमिगियन क सिंने प्रसोपुत्र प्यात्र बारादिक्वोव अपन भारत प्रथम काल म कई बार निराला म मिल थ । उगत निराला का कृतिया का गभार अध्ययन किया था ।

निराला दूसरो की दृष्टि में

निराला अपना दृष्टि में बताने मराने थे कि उन मरुता का जाच-पडना न का अपना अपमान समचत थे । समाज में यत् अपमान उह वदम कम्प पर मिदता था । वे वम अपमान को मरुसूम करते न यहा उनकी अपमानता की म्म अपमान का मान म बरतन का वह काइ प्रयत्न न करते थे व्मके निये न मुत्त थे न वक्ते थे यनी उनकी मफलता था ।

—इ हैयालाल मि.प्रभाकर

निराला अपराजेय थे । जीवन भर तरह-तरह की भीतरी बार्तरी आपटाजा का पर कर उनका मिर क्षराना चाहा पर निगना अन्तिम क्षण तक अपना आन पर अरु रत् । ऐम हा नरमिन्ता की मौन पर स्वय मत्यु का गाग भा आरु म शक जाता है ।

—अमलाल नापर

पिछन बीम वर्षों में पूरे नय माहित्य का निमाण जिम एक धुरा पर हुआ है वत् निराला जा का कम्प पाट पर न स्थित था । उराने अजान न मनी अपन उपर सारा युग जाट निया था ।

—ठाकुरप्रसाद सिंह

पन्तवाना पाक्यास्त्र जीर गास्त्राय मयान र्त्तर चिर रचनागत व्यक्तित्व व कौतुक मात्र थे वम्मुन व मबम पन्त कवि थे ।

मूू था जब न तिखत ता मराना न तिखत जीर जय निगन बरत ता एर त्तिन म हा म्म-म्म गात निये नरतत ।

अजितकुमार

निराला ता अपन जान जा ठाक-ठाक परम् नया मय । उनका दान बहुता न निगारा टुनिया न वि तिपता का मन्ता न नाना पर क्त्तर मत्य ता यत् है कि निगना स्वय न्ताहट व घट पाक्त्त दूगरा का अमन पिनात हा रत् मय ।

—आचाय गियपूजन सहाय

निराला ने अपने जीवन का अमृत जग उठान पहल ही निचाट लिया था गायद आखिरी वृद्ध तन काय के निय समाज के लिये । जा गप रह गया था वह विप था जा उहान अपन लिये रल छाडा था और जा अनक विवृतिया के रूप म समार के सामने आता रहा ।

—डा हरिवर्ण राय बच्चन

उनकी रचनाओं में माहकता के साथ प्रौढता गभीरता के साथ सरसता भी है ।

—कालि बर्मा

जीवन का मष्टि में निराला जो किना दुलभ साप में ढने माती नगी है जिने अपनी महपता का साथ देने के निय स्वण और सौत्य प्रतिष्ठा के निय जलवार का रूप चाहिये । वे तो अनगण पारस के भारा गिना गण ह न मुकुट में जडकर बाई उसकी गुफता मम्गल सवता है और न पण राण बनाकर बाई उमका भार उठा सक्ता है वह जहा है वही उमका गण दुलभ है ।

—महादेवी बर्मा

सामाजिक जीवन की रूढ़िया साहित्यिक क्षेत्र के उधन व्यक्तिक जीवन की कुठाय न सवका भजन करने के निय निराला धम याद्धा की निष्ठा के साथ जुड पड । धार कनवज्रिया समाज में उहान नाचा समथा जान वाता जानिया स धराधरा का वर्ताव किया नक्कू वन । गाव का साप्ताहिक हाटा में वे गान की दुसाना पर मान-ताल करते हुये नजर आय ।

पुत्री के त्रिग्राह में स्वयं पुगन्ति जन । साहित्यिक क्षेत्र में सवम पहना प्रहार सधनमय छाना पर न हुआ । मयम में गरार का कगन के निय कमरत की हट कर न । उन्नत गति का साधना में ही अपना सवम्ब रगा लिया ।

महाप्राण का जन-अनुमानित उपाधि उाके निय सवथा उपयुक्त है ।

—ओंकारनाथ श्रीवास्तव

मै राणा हाना ता निराणा क बाण काई और मानन न टूटना राखि हाना ता हिमालय का सबसे ऊचा गिखर नवन टिना तक बिस्व का आँखा म जाखन न रणा ।

—जानकी बल्लम पाश्चो

जब तक हम साहित्यरार का न समच उमका साहित्य नहा समझ सकते । निराणा और सषप का चाला-गामन का साथ था और सषप म जावन हा यम्य हा जाना है ।

—बेदव बनारसी

उत्त परिक्लपनाय न मनन बाता रवि अपन म पूव के समग्र सास्टुतिर विहास का पज गता है । निराणा का पृष्भूमि म भारताय-गन एतिहासिक मामागा सामृतिक जावन और सामृतिक चतना मभा वनमान है ।

—गुणाराक्षस

पाउर का भानि हा निराणा क प्रादुभास म भा टिना काय क क्षन म एक तूफान आ गया ।

—मगधतगरण उपाध्याय

करना शृंगार कविता का बिना
भूषणा क सुरवि निराणा
का ता रग न निराणा है ।

—गयाप्रसाद सुरल स्नेही

आज क्या नरमित् निराणा न जाना न चतन हाय ?
ता क्या स्वय माध पान तुम उग बनाकर वृत्ता गाय ?

—मदिली गरण गुप्त

अमन पुत्र कवि यग काय नव जगमरण जिन
स्वय भागना नया म तरा ननवा झुन ।

सुमित्रानन्दन पन्त

मस्मरणा के बीच निराला]

यह है कारे कजरारे मेघा का स्वामी ।

—डा० धमवीर भारती

तुम धरती पर चलत फिरत आसमान हा ।

—रमानाय अवस्थी

आ तेरी जावित मौतो का जीन का चोहार बना दू ।

—मालनलाल घतुर्वेदी

ताण्व और लास्य की ध्वनि म
मुक्त गीत तुमन गाय हैं ।

—डा० रामकुमार वर्मा

हे कवि कुल गुरु ह महिमामय हे सयासी
तुम्हे ममयता है साधारण भारतवासी ।

—नागाब्रून

निराला ।

जा पसीन अघडा और तूफाना से बना था
जो हर तूफान के ऊपर उन्ती ध्वजा सा तना था
जा हर तूफान क बाद इस ध्वजा स
झरते थ फून चुगनू भर फून तितलिया
बच्चा की मुम्बानें बितावा के पत्र
माना म अर अनायाम रचनायें
तुम्हारे आग पाम चितरा हुई अन्नत गाथायें ।

गुरेन्द्र तिवारी

काव्य साहित्य

- १—अधिवाम
- २—जूही की बंदी
- ३—अनामिका
- ४—परिमन
- ५—गानिका
- ६—तुलसीदास
—कुंकु रमुत्ता
- ८—अणिमा
- ९—अपरा
- १—नय पत्त
- ११—यना
- १०—अधना
- १३—जाराधना
- १४—गान गज
- १५—कवि रा

कथा साहित्य

- १—अपरा (उपयाम)
- २—अनका
—रिना (रत्ना मय)
- ६—निरुपमा (उपयाम)
- ५—प्रभावना (गनिका मिक उपयाम)
—कुत्ता भाट (रत्ना चित्र)
- ३—चनना (अपरा रचना)
- ८—द्वि-रमुर दकगिना (रत्ना चित्र)
—मदन का बाबा (रत्ना मय)

मस्मरणा व वाच निराता]

- १ -चतुरा चमार (बहानी सग्रह)
- ११-चोटा की पत्र (अधरा रचना)
- १२-जेवा (बहानी सग्रह)
- १३-वात कारनाम (उपयाम)

जीवनिया

- १-भक्त धव
- २-मन्तराणा
- ३-भक्त प्रन्वान
- ४-भीष्म

अनूदित रचनायें

- १-महाभारत
- २-श्री राम कृष्ण वचनामृत
- ३-रामायण
- ४-भारत म विववान
- ५-ब्रह्मचन्द्र चट्टोपाध्याय
- ६-गीत गुज

नाटक

- १-ममाज
- २-गुत्तना
- ३-ऊगा
- ४-अनिरुद्ध
- ५-राजयोग

विविध

- १-श्री बगना गिगत

काव्य साहित्य

- १—अधिवाम
- २—जूहा की कनी
- ३—अनामिका
- ४—परिमल
- ५—गानिना
- ६—तुलसादास
—कुंकुरमुत्ता
- ८—अणिमा
- ९—अपरा
- १—नय पत्त
- ११—रना
- १२—अचना
- १३—आराधना
- १४—गान गज
- १५—कवि रा

कथा साहित्य

- १—अप्परा (अप्याग)
- २—अतका
—रिना (राना मय)
- ६—निष्पामा (अप्याग)
- ५—प्रभावता (अनिनामिक अप्याग)
—कुंदा भाट (रमाचित्र)
- ७—चमना (अधरा रचना)
- ८—विन्दमर दक्षिणा (रमा चित्र)
—मन्द का बाबा (राना मय)

सम्मरणा क वाच निम्न]

- १०-चतुरा वना (—)
- ११-वाग वा (—)
- १२-वा (क्या म)
- १-वात वा (—)

जीवनिया

- १-नत घव
- २-मयागण
- ३-भत प्रया
- ६-भाप

अनूदित रचनायें

- १-महाभारत
- २-श्रा राम वृत्त
- ४-रामायण
- ६-भारत म विवधान
- ५-विक्रम वृत्त
- ६-गात गत्र

नाटक

- १-ममात्र
- २-गुलता
- ३-ऊषा
- ६-अनिरुद
- ५-राजयाग

विविध

- १-श्री वगता गिता

